वर्ष 24 । अंक 10 । मई, 2023

ISSN No. 2582-4546

₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

अणुविभा

क्या आप जानते हो ?

- तम्बाकू से दुनिया में हर वर्ष 80 लाख लोगों की मौत हो जाती है। इनमें लगभग 70 लाख लोग वो होते हैं जो खुद बीड़ी, सिगरेट, हुक्का, गुटखा आदि पीते और खाते हैं। 10 लाख से ज्यादा ऐसे लोग जो स्वयं धूम्रपान नहीं करते लेकिन धूम्रपान करने वाले लोगों के संपर्क में रहने से प्रभावित हो जाते हैं।
- धूम्रपान से अनेक बीमारियों की सम्भावना बढ़ जाती है। इनमें सबसे खतरनाक है – कैंसर। धूम्रपान फेफड़ों के कैंसर के करीब 90% मामलों के लिए जिम्मेदार होता है। मुँह और गले के कैंसर का बड़ा कारण धूम्रपान ही है।
- भारत सहित अनेक देशों में सिगरेट के पैकेट पर चित्र के साथ चेतावनी लिखी रहती है, जैसे – 'स्मोकिंग किल्स', 'धूम्रपान से कैंसर होता है' आदि। 18 वर्ष से कम उम्र का बच्चा तम्बाकू उत्पाद जैसे बीड़ी, सिगरेट, गुटखा नहीं खरीद सकता। स्कूल कॉलेज की 100 गज की परिधि में इन्हें बेचने पर भी कानूनी रोक है।
- निकोटीन, कार्बन मोनोऑक्साइड, सीसा जैसे जहरीले पदार्थ इन नशीली वस्तुओं को जानलेवा बना देते हैं। ये न केवल हमारे शरीर को नुकसान पहुँचाते हैं बल्कि हमारे सोचने व समझने की शक्ति को भी कम कर देते हैं।
- पूरी दुनिया 31 मई को तम्बाकू निषेध दिवस (वर्ल्ड नो टोबैको डे) मनाती है।

जानलेवा है तम्बाकू

कहाँ क्या?

आलेख

राजा राममोहन राय	: सीमा जैन 'भारत'	– 11
देवताओं का वृक्ष : देवदार	: शिवम सिंह	– 19
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस	: प्रदीप कुमार सिंह	– 26
मेरा देश : गाँव विशेष	: शिखर चन्द जैन	– 34
पक्षियों को चाहिए...	: डॉ. विनोद गुप्ता	– 37
महिला बाक्सिंग	: अनिल जायसवाल	– 38

कहानी

हारी नहीं हिम्मत	: रजनीकान्त शुक्ल	– 07
चोरी का इनाम	: ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'	– 09
आलू की चिप्स	: सुकीर्ति भटनागर	– 15
हँसली का त्याग	: डॉ. रघुराजसिंह कर्मयोगी	– 22
घुमक्कड़राम ने लिया...	: प्रकाश मनु	– 23
अब कभी गलती नहीं करेंगे	: ऋषि मोहन श्रीवास्तव	– 31
परोपकारी अतुल	: घमंडीलाल अग्रवाल	– 35
बच गया चूहा	: सुधा गुप्ता	– 39
लेन–देन का लाभ	: जयति जैन 'नूतन'	– 47

कविता-गीत

अनपढ़ बन्दर	: आशा पांडेय ओझा	– 06
गुड़िया की शादी	: विज्ञान व्रत	– 10
चंदामामा से सवाल	: यशपाल शर्मा 'यशस्वी'	– 10
मेरी प्यारी मम्मी	: मधु माहेश्वरी	– 10
गरमी जब से आई	: वसीम अहमद नगरामी	– 13
अपनी साइकिल....	: महेन्द्र कुमार वर्मा	– 18
सुन्दर ठिकाना	: अंकुश्री	– 18
माँ की छुट्टी	: आलोक कुमार मिश्रा	– 30
आगे कदम बढ़ाना	: वीनू शर्मा	– 36

विविधा

बताओ तो जानें	: चाँद मोहम्मद घोसी	– 13	बूझो तो जानें	: कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	– 25
विस्मयकारी भारत	: रवि लायटू	– 14	What is success	: जयन्ती जैन	– 46
वर्ग पहेली	: राधा पालीवाल	– 17	चित्र कथा	: संकेत गोस्वामी	– 48
दिमागी कसरत	: प्रकाश तातेड़	– 21			

स्तम्भ

सम्पादक की पाती –05, महाप्रज्ञ की कथाएँ– 06, जीवन विज्ञान के प्रयोग–08, दस सवाल : दस जवाब, जरा हँस लो,–20, आओ पढ़ें : नई किताबें – 21, प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये– 30, सुडोकू–32, व्हाट्सएप कहानी– 33, पढ़ो और जानो, उत्तरमाला– 41, कलम और कूँची– 42, नन्हा अखबार– 44, जन्मदिन की बधाई – 46, किड्स कॉर्नर– 49, अणुव्रत यात्रा – 51

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 24 अंक : 10 मई, 2023

प्रकाशक
अणुव्रत विश्व भारती
सहयोगी संस्थान
भागीरथी सेवा प्रन्यास

सम्पादक | संचय जैन 98290 52452

सह सम्पादक | प्रकाश तातेड़ 93515 52651

प्रबन्ध सम्पादक | निर्मल राँका, पंचशील जैन

कार्यालय | चन्द्रशेखर देराश्री

ग्राफिक डिजायन | गजेन्द्र दाहिमा

चित्रांकन | सुशील कुमार, दीपिका

अध्यक्ष | अविनाश नाहर

महामन्त्री | भीखम सुराणा

कोषाध्यक्ष | राकेश बरड़िया

प्रकाशन मन्त्री | देवेन्द्र डागलिया

संयोजक, पत्रिका प्रसार | सुरेन्द्र नाहटा

सम्पादकीय कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
9414343100

सदस्यता शुल्क

त्रैवार्षिक : 900 रु.

पंचवार्षिक : 1500 रु.

दस वर्ष : 3000 रु.

पंद्रह वर्ष : 7500 रु.

(कोरियर द्वारा 300 रु अतिरिक्त प्रतिवर्ष)
विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

प्रकाशक मुद्रक व सम्पादक

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित

ISSN No. 2582-4546

सदस्यता शुल्क भेजने के तीन तरीके -

नकद / चैक / ऑनलाइन	UPI	RAZOR PAY https://rzp.io/l/uGTBPsrRx
ANUVRAT VISHWA BHARTI SOCIETY IDBI Bank BRANCH Rajsamand A/c No. : 104104000046914 IFSC : IBKL0000104		

Send Payment Information On Whatsapp No. 9116634513

'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है। समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

www.anuvibha.org www.bachchonkadesh.com www.facebook.com/bkdpage

सम्पादक की पाती

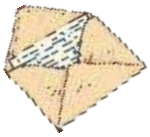

प्यारे बच्चो,

दिव्यांश स्कूल से घर लौटा तो माँ से लिपट कर उनकी गोदी में ही सो गया। माँ दिव्यांश के बालों में हाथ फेरते हुए बोली– ''क्या हुआ मेरे बेटे को! ऐसे निढ़ाल हो कर क्यों पसर गया गोदी में ?'' दिव्यांश मौन रहा और माँ उसका सिर सहलाती रही। माँ समझ रही थी कि कल से गर्मियों की छुट्टियाँ शुरू हो रही थी और इसीलिए दिव्यांश आज निश्चिन्त और हल्का महसूस कर रहा था। माँ सोच रही थी कि दिव्यांश के मन में पढ़ाई कहीं बोझ का रूप तो नहीं ले रही... तनाव का कारण तो नहीं बन रही। पहले भी दो तीन मौकों पर उन्हें ऐसा लगा था लेकिन उन्होंने गम्भीरता से नहीं लिया था।

शाम को दिव्यांश के पापा जब खाने पर बैठे, माँ ने अपने मन की बात उनसे बताई। बोलीं– ''मुझे लग रहा है कि दिव्यांश पढ़ाई को ले कर कुछ तनाव में रहता है। दिव्यांश अभी छठी कक्षा में आया है। आगे की पढ़ाई तो और भी कठिन होने वाली है। हमें इस बारे में सोचना चाहिए।''

''थोड़ा तनाव रहना अच्छा ही है, चिन्ता रखेगा तो पढ़ाई अच्छे से करेगा।'' पापा ने बात को टालते हुए कहा। तभी दिव्यांश भी आ गया और तीनों खाना खाने लगे। माँ दिव्यांश की ओर मुखातिब हो कर बोलीं– ''लगता है आज एकदम टेंशन–फ्री हो गए!'' ''हाँ माँ, पढ़ाई... एग्जाम... रिजल्ट... दिमाग पजल्ड–सा हो जाता है। इस बार पापा ने चैलेंज भी तो दे दिया था फस्ट आने का!'' दिव्यांश बोला। ''देखा, तभी तुमने मेहनत की और सेकेंड आ गए।'' पापा मानो दिव्यांश के स्कूल में सेकेंड आने का श्रेय खुद ही लेना चाह रहे थे।

खाना खाने के बाद दिव्यांश जब सोने चला गया तो माँ बोली– ''मुझे लगता है कि फस्ट–सेकेंड के चक्कर से दिव्यांश को हमें बाहर रखना चाहिए और बिना तनाव के सहज रूप से पढ़ने का माहौल देना चाहिए। म्यूजिक क्लास ज्वाइन करने की उसकी कितनी इच्छा थी लेकिन पढ़ाई के नाम पर हमने उसे नहीं भेजा। आपका साथ चाहिए, इस बार मैं उसे तनाव से मुक्त माहौल देना चाहती हूँ।''

पापा ने सारी बात ध्यान से सुनी और बोले– ''तुम ठीक ही कहती हो। मैं तुम्हारे साथ हूँ। अगले हफ्ते हम 5–7 दिनों के लिए गाँव हो आते हैं। खुले माहौल में, प्रकृति के नजदीक दिव्यांश को भी अच्छा लगेगा।''

सुबह जब माँ ने दिव्यांश को गाँव घूमने जाने और वापस आ कर म्यूजिक क्लास ज्वाइन करने की बात बताई तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसे पता नहीं था, लेकिन उसके लिए एक नई यात्रा की शुरूआत हो चुकी थी। मम्मी के मन में भी नया उत्साह था।

बच्चो, आपको भी तनाव से मुक्त रह कर पढ़ाई करनी है। तनाव हमारी शक्तियों को कम करता है। हार्दिक शुभकामनाएँ।

आपका ही,
संचय

झोले में सोना

दो संन्यासी जा रहे थे। एक गुरु था, दूसरा शिष्य। शिष्य को कहीं से एक सोने का पासा मिल गया। उसने उठाकर झोली में डाल दिया। थोड़ी दूर चला, झोली को देखने लगा। बार–बार झोली को सँभालता और आगे चलता, क्योंकि उसका मन सोने में अटका हुआ था। गति में शिथिलता आ गयी। गुरु के मन में संदेह जागा। गुरु ने पूछा– ''झोली में क्या है? बार–बार इसे क्यों देखता है?'' उसने उत्तर दिया– ''कुछ नहीं है।'' फिर दोनों आगे चलने लगे।

वे दोनों एक जगह ठहरे। शिष्य किसी कार्यवश बाहर गया। गुरु ने झोली को टटोला। देखा तो सोने का पासा पड़ा है। गुरु ने सोचा– बीमारी यही है। तत्काल गुरु ने उसे एक ओर फेंक दिया। शिष्य आया। सबसे पहले झोली को सँभाला। देखा वह नहीं है। घबरा गया, मुँह उतर गया।

गुरु ने कहा– ''क्या हुआ?'' शिष्य– ''मेरी चीज नहीं मिल रही है।'' गुरु– ''मैंने उसे कुएँ में फेंक दिया है। उसके आने से एक दिन में तुम्हारा स्वभाव बदल गया। ऐसी चीज का जाना ही भला है।''

कथाबोध – जहाँ वस्तु का संग्रह होता है, वहाँ भय आ जाता है। अभय वहीं होता है, जिसके पास संग्रह नहीं है।

पद्य कथा

अनपढ़ बन्दर

बन्दर ने जब ब्याह रचाया,
लाल रंग का कोट सिलाया।

जंगल सारा खूब सजाया,
जगह–जगह पर द्वार बनाया।
सारे रस्ते फूल बिछाये,
दूर शहर से बैंड मँगाये।

सारे बन्दर झूम रहे थे,
इधर–उधर वे घूम रहे थे।
स्टेज सजा था झूलों वाला,
अमलतास के फूलों वाला।

पार्लर से सज–धज कर आई,
वधू बन्दरिया सबको भाई।
होने वाली थी वरमाला,
बदल गया पर सारा पाला।

राज किसी ने ऐसा खोला,
बन्दर अनपढ़ कोई बोला।
तुरन्त बन्दरिया तमक गई,
वो दादा सन्मुख धमक गई।

अनपढ़ से ना ब्याह करूँगी,
पढ़े–लिखे का वरण करूँगी।
दूल्हा बन्दर बैठा उदास,
सोचे हाय मैं पढ़ता काश!

आशा पांडेय ओझा
उदयपुर (राजस्थान)

साहसी बच्चे

हारी नहीं हिम्मत

रामसधारन और अर्जुन, छत्तीसगढ़ राज्य में सरगुजा जिले के भालूकचर गाँव के निवासी थे। यह 3 मई 2003 की घटना थी। वे दोनों अपनी गायें चराने के लिए बरनई नदी के किनारे सटे जंगल की ओर लेकर जा रहे थे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने अपनी गायों को चरने के लिए छोड़ दिया। वे दोनों पेड़ के नीचे छाँव में आराम करने के लिए बैठ गए। काफी देर तक मवेशी चरते रहे। आसपास में सन्नाटा था। दोपहर का समय हुआ तो जंगल के साथ लगे खेतों में काम करने वाले लोग घर जा चुके थे। रामसधारन और अर्जुन बातें करते–करते चुप होकर आराम करने लगे। गायें भी चरते–चरते बैठ गईं थीं।

धीरे–धीरे सूरज ढलते हुए पश्चिम दिशा की ओर जाने लगा तो अर्जुन और रामसधारन ने भी वापसी का मन बना लिया। तभी अर्जुन की गाय इस अन्दाज़ में रम्भाई मानो वह बहुत प्यासी हो। अर्जुन ने रामसधारन से कहा– ''लगता है गाय प्यासी है। आओ, चलने से पहले इसे पानी पिला दें।'' ''मैं यहीं सामने अपनी गाय के साथ खड़ा हूँ तुम जाओ और नदी से गाय को पानी पिला लाओ।'' रामसधारन ने अँगड़ाई लेते हुए कहा। ''चलो कोई बात नहीं, मैं अभी गाय को पानी पिला लाता हूँ।'' यह कहकर अर्जुन अपनी गाय को नदी की ओर ले गया।

सामने ही नदी का किनारा था। रामसधारन अर्जुन को गाय को पानी की ओर ले जाते देखने लगा। अर्जुन ने गाय को पानी पिलाया और उसे हाँकता हुआ वापस लौटाकर लाने लगा। तभी रामसधारन चौंक पड़ा। वापस लौटते अर्जुन पर झाड़ियों के पीछे से निकलकर एक तेंदुए ने यकायक हमला कर दिया। अर्जुन को खुद समझ नहीं आया कि अचानक यह क्या हो गया? अपने ऊपर तेंदुए को हमला करते देखकर उसके होश उड़ गए थे। तेंदुए ने फुर्ती से उस पर आक्रमण कर उसे गिरा दिया। जब उसने अपने तेज दाँतों से अर्जुन को घायल करना शुरू कर दिया तो दर्द और भय से उसकी चीख निकल गई।

रामसधारन की निगाह तो उस पर ही थी। एक पल तो उसका दिमाग खुद सन्न सा रह गया मगर फिर वह तेजी से अर्जुन को बचाने के लिए उसकी ओर दौड़ पड़ा। रामसधारन ने तेंदुए पर पत्थरों से वार करना शुरू कर दिया। साथ में वह बचाव के लिए चीखता भी जा रहा था। जब तेंदुए ने रामसधारन को खुद पर हमला करते देखा तो उसने अर्जुन को छोड़कर रामसधारन की ओर गुस्से से देखा।

मगर रामसधारन ने बिना डरे पत्थरों का हमला जारी रखा तो उसने अर्जुन को छोड़ दिया और अब उसके निशाने पर रामसधारन था। तेंदुआ रामसधारन की ओर लपका लेकिन रामसधारन भागा नहीं और बिना डरे लगातार आक्रमण करता रहा।

देखें पृष्ठ 13...

चरित्र निर्माण

जीवन विज्ञान के प्रयोग

अनुकरण और अभ्यास से चरित्र बनता है। एक बालक अपने परिवार, विद्यालय मित्र–मण्डली में, टी.वी. पर और सभा समारोहों में जो कुछ देखता है उसके अनुरूप बनने की चेष्टा करता है। अच्छी बात को पकड़ने में उसे कठिनाई होती है, पर बुरी बात जल्दी ही पकड़ लेता है।

अनुकरण के कारण वह उस काम को बार–बार करता है और इस प्रकार उस कार्य को करने में कुशल बन जाता है। वह काम उसके चरित्र का अंग बन जाता है। इस प्रकार के अनेक कार्य मिलकर उसके जीवन की शैली बनाते हैं। जो जैसा होता है उसके सम्बन्ध दूसरे व्यक्तियों, परिवारों, समाज और देश के साथ भी वैसे ही हो जाते हैं। इसलिए अच्छा बालक बनना हैं तो अच्छी जीवन शैली को अपनाना होगा। ध्यान रहे कि शिक्षा और ज्ञान से बुरी आदतें और बुरे संस्कार छूटते हैं।

समानता का व्यवहार

एक लड़का किसी को नीचा समझकर उससे घृणा का व्यवहार करता है। इससे उसके अन्य व्यक्ति परिवार और समाज के साथ सम्बन्ध बिगड़ जाते हैं।

दूसरा लड़का किसी को नीचा नहीं समझकर उससे समानता का व्यवहार करता है। इससे उसके अन्य व्यक्ति, परिवार और समाज के साथ सम्बन्ध मधुर बनते हैं। सद्व्यवहार सबको अच्छा लगता है। एक लड़का अपने परिवार में कलह देखता है। इससे लड़के पर बुरा प्रभाव पड़ता है, वह भी झगड़ालू बन जाता है।

एक लड़का अपने परिवार में प्रेम का वातावरण देखता है। इससे उसमें शान्तवृत्ति पैदा होती है। उसके सम्बन्ध अपने मित्रों, परिवार, समाज और देश की संस्थाओं के साथ मधुर बनते हैं।

परिवार में प्रेम का वातावरण

एक लड़का कुछ भी नहीं करता। उसका सारा काम उसकी माँ कर देती हैं। इससे लड़का आलसी बनता है। वह दूसरों पर निर्भर होता है। उसके सम्बन्ध दूसरों के साथ बिगड़ते हैं। एक लड़का अपनी माँ को उसके काम में मदद करता है। ऐसा बालक श्रमशील बनता है। उसे कहीं भी कठिनाई नहीं उठानी पड़ती है। वह स्वावलम्बी होता है।

प्रेमपूर्वक आपसी व्यवहार

एक लड़का हिंसक वृत्ति के कारण सबसे झगड़ा करता है। जिसके कारण उसके सम्बन्ध किसी के साथ अच्छे नहीं होते हैं ओर उसे सभी घृणा की दृष्टि से देखते हैं। उसकी हिंसक वृत्ति किसी को भी अच्छी नहीं लगती है।

एक लड़का सभी लड़को के साथ प्रेमपूर्वक रहता है। इसके कारण उसके सम्बन्ध सबके साथ मित्रतापूर्ण होते हैं। सभी उसकी प्रशंसा करते हैं। अहिंसक व्यवहार से सभी प्रसन्न होते हैं।

एक लड़का अपनी इच्छाओं की पूर्ति हेतु दूसरे लड़के का सामान चुरा लेता है। दूसरा लड़का खोई हुई वस्तु को वापस लौटा देता है। सभी उसकी प्रशंसा करते हैं। उसे ईमानदार समझते हैं, ऐसा वही करता है जो अपनी इच्छाओं पर संयम रखता है।

सात्विक भोजन

एक लड़का सात्विक आहार करता है और किसी तरह का नशा नहीं करता। यह लड़का पढ़ने में पूरा समय लगाता है। इसलिए कक्षा में अच्छे अंकों से पास होता है। सभी उसका आदर करते हैं और उसके सम्बन्ध सबसे मधुर बनते हैं। इसका एक मात्र कारण आहार–शुद्धि और व्यसन–मुक्ति है।

इस प्रकार अच्छी आदतों व अच्छी संगत से हमारा चरित्र उत्तम बनता है।

चोरी का इनाम

मम्मी ने जैसे घर में कदम रखा वैसे ही वैदू खुश हो गया, "देखो मम्मा! मैं क्या लाया हूँ?" कहते हुए उसने एक किताब मम्मी के सामने रख दी। "अच्छा जी।" कहते हुए मम्मी ने किताब उठाई। उसे आगे–पीछे देखा। कीमत पढ़ी। फिर वैदू से बोली– "यह कहाँ से लाए हो?" "मम्मीजी, एक दुकान पर पड़ी थी। पसन्द आई। उठाकर ले आया।" उसने मासूम भाव से कहा।

"इसके पैसे नहीं दिए।" "नहीं।" "क्यों भाई?" "उस दुकान पर लिखा था एक के साथ एक फ्री पुस्तक। इसलिए मैंने फ्री वाली पुस्तक ले ली।" वैदू ने कहा तो मम्मी बोली– "बेटा जब एक पुस्तक खरीदते हैं तब दूसरी पुस्तक फ्री मिलती है।"

"अच्छा मम्मा।" वैदू ने कहा– "अब?" उसे कुछ–कुछ समझ में आ रहा था। उसने पुस्तक चुपचाप उठाई थी। यह उसकी गलती थी। "इस तरह दुकानदार की नजरें बचाकर पुस्तक उठाने को चोरी करना कहते हैं।" मम्मी ने कहा तो वैदू को लगा, उसने अनजाने में ही सही चोरी की है। "मम्मा, अब क्या करूँ?" उसने पूछा।

"जिस दुकान से पुस्तक लाए हो उस दुकानदार को लौटा दो। उससे कहना, यह पुस्तक दुकान से चुपचाप उठाकर ले गया था इसलिए मेरी इस गलती को माफ कर दें।" वैदू अपनी मम्मी के साथ दुकानदार के पास गया। जैसा उसकी मम्मी ने कहा था, वैसा ही उसने बोला– "अंकलजी! यह पुस्तक मैंने आपकी दुकान से चुपचाप उठा ली थी। मेरी इस गलती को क्षमा कर दीजिए।"

यह सुनकर दुकानदार खुश हो गया। उसने वैदू के हाथ से पुस्तक वापस नहीं लेते हुए कहा– "इसे अपने पास ही रखिए बेटा!" "क्यों अंकलजी?" "यह पुस्तक आपकी गलती स्वीकारने का इनाम है।" दुकानदार ने कहा तो वैदू बोला– "तब तो आपको इस पुस्तक की कीमत लेना होगी।" कहते हुए वैदू ने मम्मी द्वारा दिए गए पैसे दुकानदार की ओर बढ़ा दिए। तब दुकानदार ने उसके हाथ से रुपए लिए। एक किताब और उठाई। वैदू की ओर बढ़ा दी। "यह पुस्तक भी तुम्हें पसन्द थी ना? उस दिन तुम इस पुस्तक को भी देख रहे थे। इसे इनाम के रूप में अपने पास रखो।"

''यह कैसा इनाम है!" दुकानदार ने कहा– "अपनी गलती स्वीकारने का इनाम!" "मगर आप इस पुस्तक का पैसा क्यों नहीं ले रहे हो?" "क्योंकि इस पुस्तक का पैसा आपकी मम्मी ने पहले ही दे दिया था।" दुकानदार ने कहा– "वे जब अपनी शाला के सामान का पैसा चुकाने आई थी, तब यह बात मैंने उन्हें बता दी थी। तब उन्होंने इस पुस्तक का पैसा भी चुका दिया था।"

देखें पृष्ठ 12...

गुड़िया की शादी

दादी! दादी!
प्यारी दादी!
करवा दो गुड़िया की शादी।

देखो कितनी बड़ी हो गयी
भोलेपन की उमर खो गयी।
लेकिन मेरे संग में रहकर
अब भी लगती सीधी–सादी।...

सज्जन–सा इक ढूँढ़ो लड़का
हँसमुख–सा हो अच्छे घर का।
देर नहीं अब जल्दी ढूँढ़ो
चाहे करनी पड़े मुनादी* ।...

पढ़ा–लिखा हो सीधा–सच्चा
सबको लगे शेर का बच्चा।
लेकिन फिर भी एक शर्त है
वह पहनेगा केवल खादी।...

दादी! दादी !
प्यारी दादी !
करवा दो गुड़िया की शादी।

विज्ञान व्रत
नोएडा (उत्तर प्रदेश)

*मुनादी – घोषणा

चंदामामा से सवाल

चंदा मामा आ भी जाओ।
राज जरा हमको समझाओ।

बच्चों के मामा कहलाते।
राखी पर ननिहाल न आते।
क्या नाना से झगड़ा है कुछ,
ये तेवर तो हमें न भाते।
नानी को मत और सताओ।...

अकसर दुबले–पतले लेकिन।
गोलू–मोलू पूनम के दिन।
रात अमावस की ओझल क्यों,
कहाँ बिताते हो वो पल–छिन।
गुत्थी इतनी सी सुलझाओ।...

पीते क्या हो, खाते क्या हो?
तारों से बतियाते क्या हो?
इतने उजले आखिर कैसे,
मुख पर आप लगाते क्या हो?
दर्पण निरख न यों इतराओ।...

चंदा मामा आ भी जाओ।
राज जरा हमको समझाओ।

यशपाल शर्मा 'यशस्वी'
पहुँना (राजस्थान)

मेरी प्यारी मम्मी

मेरी मम्मी जग से न्यारी,
लगती मुझको सबसे प्यारी।
बड़े प्यार से मुझे जगाए,
सारी सुस्ती दूर भगाए।

नाश्ता सुबह जल्दी बनाएँ,
हमें खिलाएँ फिर खुद खाएँ।
मन हमारा जब रूठ जाएँ,
अपने हाथों हमें खिलाएँ।

मेरा सुन्दर रूप सजाएँ,
प्रेम भाव हमको दिखलाएँ।
आदर करना हमें बताएँ,
अच्छी आदत हमें सिखाएँ।

रोज रात कहानी सुनाएँ,
नैतिकता का पाठ पढ़ाएँ।
लोरी गाकर हमें सुलाएँ,
परीलोक की सैर कराएँ।

काम, कष्ट से कभी न हारी,
मेरी मम्मी जग से न्यारी।

मधु माहेश्वरी
सलूम्बर (राजस्थान)

बालक बना महान

नारी के कल्याण के लिए समर्पित

राजा राममोहन राय

"अरे शुभम, छोटू कविता को मार रहा है! तुम कुछ बोलते क्यों नहीं?" "दीदी, मैं क्या करूं? यह तो हरदिन ऐसे ही चलता रहता है!" "तुम्हारी बहन छोटी है, कोई उसे परेशान करे तो तुम उसे बचाओगे नहीं?" "दीदी, सबको अपनी लड़ाई खुद ही लड़नी पड़ती है। कोई किसी को कब तक बचायेगा?" "सब में एक सी हिम्मत और समझ होती तो सब लोग अपनी लड़ाई खुद लड़ लेते। यदि ऐसा राजा राममोहन राय सोचते तो समाज की तस्वीर आज कुछ और ही होती!"

"यह राजा राम कौन हैं? यह नाम तो मैं पहली बार सुन रहा हूँ!" "यही दुःख की बात है कि हमारी आज की पीढ़ी महापुरुषों के बारे में बहुत कम जानती है। यह राज घराने के राजा नहीं थे पर उन्हें यह उपाधि दी गई थी। राजा राम मोहन राय एक ऐसा नाम है जिन्होंने नारी समाज के उत्थान के लिए बहुत काम किया था! सती प्रथा...।" "सती प्रथा, यह क्या है? दीदी हमें उनके बारे में विस्तार से बताइए ना!" "हाँ, जरूर!"

"कविता और छोटू इधर आओ! दीदी एक राजा की कहानी सुना रही हैं।" कहानी का नाम सुनकर वे दोनों दौड़कर आ गए और अपनी लड़ाई भूल गए। "22 मई 1772 को बंगाल के हुगली जिले में राधा नगर गाँव में एक बालक का जन्म हुआ। उनके पिता बंगाल के नवाब की सेवा में थे इसलिए उन्हें राय की उपाधि प्राप्त थी। दिल्ली के सम्राट ने उन्हें राजा की उपाधि से विभूषित किया था।" "तो इसलिए वे राजा कहलाए!" "हाँ, बेटे!"

"राजा राममोहन राय बांग्ला, फारसी, अरबी, संस्कृत, हिंदी, अँग्रेजी, ग्रीक, फ्रेंच, और लेटिन इन सब भाषाओं को जानते थे!" "अच्छा, वे नौ भाषाएँ जानते थे!" "चलो, अब आगे सुनो– ''राजा राम मोहन राय की आस्था सब धर्मों के लिए समान थी। वे मूर्ति पूजा के घोर विरोधी थे। एक समाचार पत्र में लिखा गया था कि राजा राममोहन राय को गवर्नर बना देना चाहिए क्योंकि वह न हिंदू हैं, न मुसलमान हैं, वे पूरी निष्पक्षता से अपना कार्यभार सँभाल सकते हैं।

सन् 1802 में उन्होंने एकेश्वरवाद के समर्थन में फारसी भाषा में "टूफरवुल मुवादिन" नामक पुस्तक की रचना की थी। जिसकी भूमिका उन्होंने अरबी भाषा में लिखी थी। 1816 में उनकी पुस्तक "वेदांतसार" का भी प्रकाशन हुआ था। संस्कृत भाषा का ज्ञान उन्होंने गुरु नंदकुमार से लिया था। उन्होंने तिब्बत जाकर बौद्ध धर्म का अध्ययन भी किया था।

40 वर्ष की उम्र में वे नौकरी छोड़कर कोलकाता में समाज के कार्य में लग गए थे। इसी दिशा में उन्होंने सती प्रथा का विरोध किया। बहु विवाह, जाति प्रथा, अंधविश्वास और विधवाओं के पुनर्विवाह के साथ ही उन्होंने बेटियों को पिता की सम्पत्ति दिलवाने की दिशा में भी कार्य किया था। उन्होंने 1814 में आत्मीय सभा बनाई थी। जिसका उद्देश्य ईश्वर एकत्व का प्रचार था। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि सती प्रथा को बन्द करवाना थी।"

"दीदी, सती प्रथा क्या होती है? इसे समझाइए!" "सती प्रथा माने किसी महिला के पति की मृत्यु हो जाए तो उसे भी अपने पति के साथ जिन्दा जलाया जाता था।" "हे भगवान! जिंदा... जलाना यह

तो कितना भयानक है! क्या वह महिला मना नहीं कर देती थी?" "हाँ, बहुत दर्दनाक है पर ऐसा ही होता था। और यदि कोई महिला मना करे तो उसके साथ जबरदस्ती होती थी। राजा राममोहन राय जब विदेश में थे तो उनके भाई की मृत्यु हो गई थी। तब उनकी भाभी को जिंदा जला दिया गया था। इस घटना से वे इतना आहत हुए थे कि उन्होंने प्रण लिया था कि मैं अब इस अमानवीय प्रथा को ही समाप्त करवा दूँगा।"

राजा राममोहन राय के कठोर प्रयासों से सरकार द्वारा इस कुप्रथा को गैरकानूनी और दंडनीय घोषित करवाया गया और उन्होंने इस अमानवीय प्रथा के विरुद्ध निरन्तर आन्दोलन चलाया था। जिसके कारण उनका इतना विरोध हुआ था कि उनका जीवन ही खतरे में पड़ गया था। मगर वह शत्रुओं के हमले से कभी घबराए नहीं और 1829 में सती प्रथा को बन्द कराने में समर्थ हो सके।" "यह तो सचमुच बहुत बड़ी बात है।"

"इतना ही नहीं, उन्होंने वेदांत स्कूल ऑफ फिलॉसोफी में उपनिषद का अभ्यास किया था। वैदिक साहित्य को अँग्रेजी में रूपान्तरित किया था ताकि विश्व में ज्यादा लोग इसे पढ़ सकें! राजा राममोहन राय स्वभाव से अत्यन्त शालीन थे लेकिन अन्याय के सख्त विरोधी थे। उनके दृढ़ व्यक्तित्व का एक और उदाहरण सुनो– एक दिन राजा राममोहन राय पालकी में सवार होकर गंगा घाट से भागलपुर की ओर जा रहे थे। ठीक उसी समय कलेक्टर उनके सामने आ गए। पालकी में पर्दे लगे होने के कारण राममोहन उनको देख नहीं पाए और कलेक्टर के सामने से उनकी पालकी गुजर गई। इससे कलेक्टर को ठेस पहुँची कि पालकी बिना उनके सामने रुके कैसे आगे निकल गई? उस समय पालकी का आमना–सामना होने पर अभिवादन करना अनिवार्य था। इस गुस्ताखी पर कलेक्टर आग बबूला हो उठे! उन्होंने पालकी रुकवाई।

राममोहन ने अपनी सफाई पेश की पर अँग्रेज अफसर ने कुछ भी नहीं सुना। जब कलेक्टर ने उनकी बात नहीं सुनी तो राममोहन फिर से पालकी पर चढ़े और आगे बढ़ गए। उन्हें यह बात समझ में आ गई कि जब तक हम भारतीय लोग पूरे मन से अपना सम्मान नहीं करेंगे तो अँग्रेजों के आगे झुकते ही रहेंगे। इसके बाद उन्होंने लॉर्ड मिंटो को चिट्ठी लिखी और कलेक्टर की पूरी बात बताई। लॉर्ड मिंटो ने राम मोहन का पक्ष लिया और कहा कि किसी प्रतिष्ठित सज्जन को इस तरह आहत करना ठीक नहीं है। ऐसा व्यवहार आगे नहीं होना चाहिए।"

"वे सचमुच बहुत दृढ़ निश्चय वाले राजा थे! दीदी, आपका बहुत शुक्रिया इस जानकारी के लिए!"

"मिल कर रहो और एक दूसरे की चिंता करो!" कहते हुए उन्होंने तीनों को प्यार से देखा।

सीमा जैन 'भारत'
ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

'चोरी का इनाम' पृष्ठ 10 का शेष ...

"क्या!" वैदू चौंक कर बोला। "यानी मम्मी को सब पता था। फिर भी उन्होंने मुझे चोरी करने के लिए डाँटा–डपटा भी नहीं, मारा भी नहीं।" "हाँ बेटा!" मम्मी जो कब से चुपचाप खड़ी थी बोली– "मैं अपने बेटे को गलती का एहसास कराना चाहती थी। मारना व डाँटना नहीं चाहती थी।" जैसे ही मम्मी ने कहा वैदू पश्चाताप से भर उठा। उसे अपनी गलती का एहसास हो गया था। उसने मन ही मन निश्चय कर लिया था, वह कभी ऐसी गलती नहीं करेगा।

"मम्मा मुझे माफ कर दीजिए। मैं आपसे प्रॉमिस करता हूँ कि आज के बाद कभी इस तरह की हरकत नहीं करूँगा।" यह कहते हुए वैदू ने अपने कान पकड़ लिए तो मम्मी ने कहा– "मुझे पता है मेरा बेटा अब इस तरह की गलती कभी नहीं करेगा।" कहते हुए मम्मी ने उसे गले लगाया। इसके पश्चात दोनों माँ बेटा चुपचाप अपने घर की ओर चल दिए।

ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'
रतनगढ़ (मध्य प्रदेश)

गरमी जब से आई है

गरमी जब से आई है,
बर्फ ने ली अंगड़ाई है।
आग बरसती किरणों से
खूब धरा गरमायी है।

तपिश हवा में बढ़ी बहुत,
दोपहरी अलसायी है।
सूरज से करते रहते,
बादल छुपम छुपाई है।

त्वचा पर देखो आ जाती,
लू करने तुरपाई है।
आम बहुत देते हैं साथ,
इतनी तो अच्छाई है।

कोयल ने बाग़ों में आ,
फिर से धूम मचाई है।
गरमी में राहत देने,
आयी बर्फ–मलाई है।

वसीम अहमद नगरामी, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

'हारी नहीं हिम्मत' पृष्ठ 7 का शेष....

नहीं और बिना डरे लगातार आक्रमण करता रहा। इसके साथ–साथ वह बराबर मदद के लिए चिल्लाता भी जा रहा था। अगर वह उस समय डर कर पीछे भागता तो उसका बचना नामुमकिन था क्योंकि तेंदुए की दो छलाँगें उस तक पहुँच जाती और अर्जुन की जगह वह उस तेंदुए का शिकार हो जाता। मगर उसके लगातार पत्थरों के वार से तेंदुए को आगे बढ़ने का मौका नहीं मिल पा रहा था।

इसी बीच उसकी चीखों को सुनकर खेतों में काम करने वाले कुछ लोग आवाज़ देते हुए उसकी ओर आने लगे। जिनकी आवाज़ें सुनकर तेंदुए ने वहाँ से भागना उचित समझा। तेंदुए के जंगल में भागते ही रामसधारन और वे लोग दौड़ते हुए अर्जुन के पास आए। उन्होंने देखा कि अर्जुन काफी घायल है। उसे तुरन्त अस्पताल ले जाया गया। जहाँ उपचार के बाद अर्जुन ठीक हो सका।

इस तरह रामसधारन की अत्यधिक हिम्मत से तेंदुए का सामना करने से अर्जुन की जान बच गई। रामसधारन को उसकी वीरता के लिए देश के प्रधानमन्त्री ने वर्ष 2004 के गणतन्त्र दिवस से पूर्व दिल्ली में राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

बताओ तो जानें

यहाँ दिए गए चित्र में पाँच गिलहरियाँ हैं। आपको खोजकर बताना है कि इनमें से कौन सी दो गिलहरियाँ एक समान है।

उत्तर इसी अंक में

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

130,000 टन ग्रेनाईट का उपयोग करके निर्मित विश्वभर में सबसे ऊंचा तंजावुर का तेरह मंज़िला वृहदेश्वर मन्दिर ऐसी अनोखी इमारत है जो बिना नीव के सैंकड़ों वर्षों से अटल खड़ी है और आश्चर्य यह कि जिन पत्थरों से यह मन्दिर बना है उन्हें एक-दूसरे से जोड़ने को कोई चुनाई नहीं की गयी है। मन्दिर का गुम्बद 80 टन के जिस एक ही पत्थर से बना है उसे उस काल में बिना यांत्रिकी सहायता के इतनी ऊंचाई तक कैसे पहुंचाया गया होगा, यह आज भी एक अनबूझ पहेली की तरह है।

बत्तख के अंडे, क्रिकेट की बॉल और संतरों जितने बड़े ओले 30 अप्रैल 1888 के दिन मुरादाबाद (उ.प्र.) में बरसे थे। इसमें 246 लोग और 1600 मवेशी अपनी जान गँवा बैठे। ऐसे हादसों में मृत्यु की यह उच्चतम दर थी।

भारत दुनियाभर में अकेला ऐसा गैर इस्लामिक मुल्क है जहां सबसे ज्यादा मस्जिदें हैं और यह संख्या है तीन लाख। इतनी मस्जिदें संसार के किसी भी अन्य देश या इस्लामी मुल्क तक में नहीं हैं।

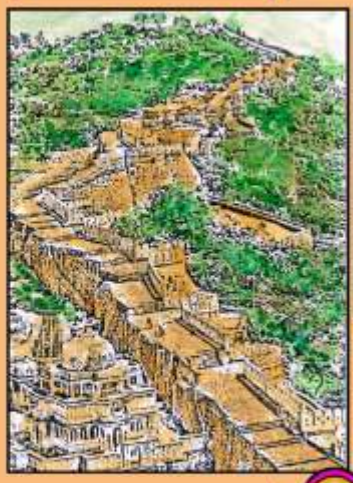

मैंगोस्टीन का नाम आपने शायद ही कभी सुना हो पर वास्तव में दक्षिण भारत में 'फलों की रानी' कहलाने वाला, प्रचुर मात्रा में पोषक तत्वों से भरपूर यह फल स्वास्थ्य के लिए बहुत अधिक लाभदायक होता है।

उदयपुर के निकट राजसमंद जिले में 15वीं शताब्दी में निर्मित महाराणा प्रताप के जन्मस्थान कुम्भलगढ़ दुर्ग के चारों ओर बनी सुरक्षा दीवार, चीन की विश्वप्रसिद्ध दीवार के बाद इसप्रकार की दूसरे नंबर की सबसे बड़ी संरचना है जो 36 किमी. लम्बी व 15 मी. चौड़ी है और जिस पर 8 घोड़े एक पंक्ति में साथ-साथ दौड़ सकते हैं।

रवि लायटू
बरेली (उत्तर प्रदेश)

आलू की चिप्स

इस बार गर्मियों की छुट्टियों में रिद्धि और सारंग के पिताजी ने जब दक्षिण भारत घूमने जाने का प्रोग्राम बनाया तो दोनों बच्चे खुशी से झूम उठे। उनकी खुशी तब और भी दोगुनी हो गई जब उन्हें पता चला कि उनकी माँ सफ़र के लिए ढेर सारे आलू के परांठे या आलू की भाजी और पूरियाँ बनाकर सफ़र में साथ ले चलेंगी। यह सोचते ही उनके मुँह से लार टपकने लगी। वैसे भी हर सब्जी में आलू ही अधिक पसन्द थे उन्हें, चाहे वे आलू मटर हों या फिर आलू गोभी। किन्तु जब बहुत सोच कर माँ ने कहा कि गर्मी के मौसम में तो आलू या आलू से बनी कोई भी सब्जी बहुत जल्दी खराब हो जाती है इसलिए अचार के साथ सादी पूरी ही ठीक रहेगी, यही निर्णय माँ ने लिया। बच्चे जानते थे कि माँ ने एक बार जो बात कह दी, वह पत्थर की लकीर हो जाती है। फलस्वरूप बिना किसी तर्क–वितर्क के वे अपने–अपने कामों में लग गए। पर माँ के इस निर्णय से उनका मन तो उदास हो ही गया था।

कुछ ही दिनों के अन्तराल में अपनी पूरी तैयारी के साथ वे यात्रा के लिए निकल पड़े। लम्बा सफर होने से रेलगाड़ी में यात्रा करना मनोरंजक और आनन्ददायक अनुभव था। तरह–तरह के लोग, फेरी वाले, सीटी बजाती हवा से होड़ लगाती गाड़ी के वेग से पीछे छूटते स्टेशन और हर ओर हरियाली ही हरियाली। सभी कुछ तो बच्चों के मन के अनुरूप था, जिसका वे भरपूर आनन्द उठा रहे थे।

रात का अंधेरा हर ओर पसर गया। अब तक बच्चों को भूख भी लग आई थी। तब माँ ने अचार और

दो–दो पूरियाँ उनकी प्लेटों में परोस दीं। यह देख सारंग का आह्लादित हुआ मन दुःखी हो गया। रिद्धि भी उदास थी। माँ जानती थी कि मनपसन्द भोजन न मिलने के कारण बच्चों ने भरपेट भोजन नहीं किया और थोड़ा–सा ही खाकर पेट भर जाने का नाटक कर रहे हैं।

तभी माँ ने धीरे से उठकर सीट के नीचे रखे बैग में से एक डिब्बा निकाला और सारंग को थमा दिया। "अब इसमें क्या है?" वह बुझे मन से बोला। "स्वयं ही देख लो ना।" माँ के ऐसा कहने पर जैसे ही उसने डिब्बा खोला, आश्चर्यचकित रह गया। "अरे वाह! आलू के चिप्स, वह भी इतने सारे।" दोनों बच्चे एक साथ बोले। उनकी आँखों में चंदा–तारे झिलमिलाने लगे थे। "माँ, आप सच में दुनिया की सबसे अच्छी माँ हो, जो आपने हमारी पसन्द का इतना ख्याल रखा और हमारे लिए इतने स्वादिष्ट चिप्स बनाकर लाईं।" धीरे–धीरे चिप्स कुतरती रिद्धि बोली तो सारंग ने भी उसकी हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा– "हमारी प्यारी माँ, हमारा इतना ध्यान रखने के लिए हम आपको हार्दिक धन्यवाद देते हैं।"

"बेटा, धन्यवाद ही करना है तो जॉर्ज क्रम का करो, जिन्होंने 'आलू चिप्स' का आविष्कार किया। ये खाने में हल्के और स्वादिष्ट होने के साथ–साथ लम्बे समय तक ख़राब भी नहीं होते और तुम जैसे बच्चे जो हर समय आलू–पुराण ही बाँचते रहते हैं, उन्हें स्वाद तथा मानसिक संतोष दोनों ही प्रदान करते हैं।" "पर माँ, जॉर्ज क्रम थे कौन?" रिद्धि की आँखों में कौतूहल जाग उठा।" हाँ माँ, बताओ ना, कौन थे वह और करते क्या थे?" सारंग ने भी जिज्ञासावश पूछा।

"बच्चो, वह एक शेफ थे, जिनका सन 1824 में अमेरिका में जन्म हुआ था। उनका असली नाम जॉर्ज स्पेक था। बाद में वह जॉर्ज क्रम के नाम से प्रसिद्ध हुए। वे एक अमेरिकी रेस्टोरेंट में शेफ बन गए, क्योंकि उन्हें बचपन से ही भाँति–भाँति के व्यंजन बनाने में रुचि थी।"

माँ ने थोड़ा रुक कर आगे कहा– "बेटा! एक दिन किसी ग्राहक ने रेस्टोरेंट के मैनेजर को जॉर्ज क्रम की शिकायत करते हुए यह कह दिया कि उनके द्वारा बनाए गए फ्राइड आलू गीले और लचीले हैं, जबकि वे कुरकुरे और करारे होने चाहिए। बस यही बात क्रम को बुरी लग गई और अगले ही दिन उन्होंने आलुओं को बारीक गोल टुकड़ों में काट कर तब तक तला जब तक वे कुरकुरे नहीं हो गए। फिर उन पर नमक बुरक कर ग्राहक को परोस दिया जो उसे बहुत पसन्द आए।

धीरे–धीरे क्रम के द्वारा बनाए जाने वाले आलू चिप्स का कारोबार तीव्रता से फैलने लगा। इस आविष्कार से क्रम को इतनी सफलता मिली कि 1860 में उन्होंने अपना निजी रेस्टोरेंट खोल लिया और खूब धन कमाया। 1914 में 90 वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया, पर लोग आज भी उन्हें सम्मान के साथ याद करते हैं।"

"माँ, मैं तो विश्वास ही नहीं कर पा रहा कि एक शेफ होकर जॉर्ज क्रम ने अपना स्वयं का रेस्टोरेंट खोल लिया और मालामाल हो गए। बड़े ही कमाल की बात है यह तो।" "बेटा, यदि मन में लगन हो और कुछ कर दिखाने की प्रबल इच्छा हो तो कोई भी कमाल कर सकता है। तुम दोनों बच्चे भी ऐसा ही कोई महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकते हो, जिससे लोग तुम्हें भी सदियों तक याद करें। पर सारंग इस समय तो तुम चिप्स के डिब्बे की ओर ध्यान दो। ऐसा ना हो कि तुम बातें ही करते रह जाओ और रिद्धि सारे चिप्स चट कर जाए। बस फिर तो तुम मुँह ताकते ही रह जाओगे।" पापा के ऐसा कहते ही रिद्धि सहित सारंग और उसकी माँ के चेहरों पर मुस्कान तैर गई।

सुकीर्ति भटनागर
पटियाला (पंजाब)

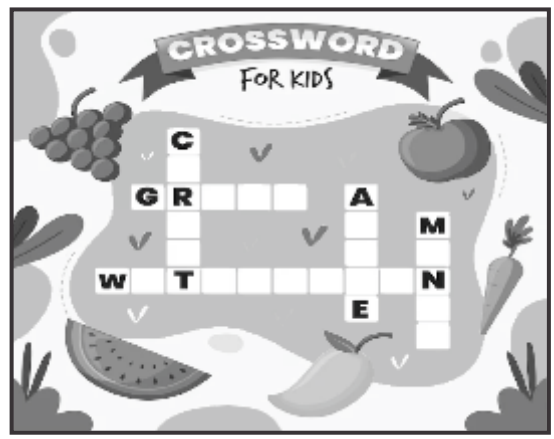

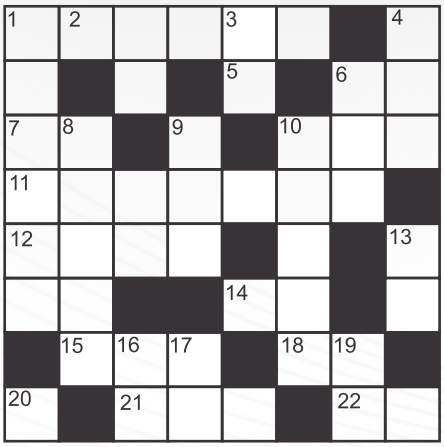

वर्ग पहेली

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

ऊपर से नीचे

1. एक प्राचीन गणितज्ञ (6)
2. होड़, प्रतियोगिता (2)
3. शास्त्रों का ज्ञाता (2)
4. आर्थिक दंड, सजा (3)
6. संकट, मुसीबत (3)
8. इच्छानुसार, मन मर्जी का (5)
9. बाधा, रुकावट (3)
10. चाट में डाली जाने वाली सामग्री (5)
13. फायदा, हानि का विलोम, मुनाफा (2)
16. मुँह से निकलने वाला द्रव (2)
17. गन्ना, सांठा (2)
19. एक रसीला फल (2)

बाएँ से दाएँ

1. पेड़—पौधों की जानकारी देने वाला विज्ञान (6)
5. औरत, नारी (1)
7. मैं का बहुवचन (2)
10. प्रेम करना (3)
11. खनिज लवणों से युक्त शुद्ध जल का अंग्रेजी नाम (7)
12. भारत का एक ठंडा प्रदेश (4)
14. धोखा, छल (2)
15. हथेली के ऊपर वाला भाग (3)
18. सुर्खी, हल्का लाल रंग (2)
20. बुद्धि, मति (1)
21. जेब में डालना (3)
22. शक्कर, चीन का नागरिक (2)

उत्तर इसी अंक में

कवि रहीम कहते हैं...

कि जिससे कुछ पा सकें, उससे ही किसी वस्तु की आशा करना उचित है, क्योंकि जो तालाब पानी से खाली हो वहाँ जाकर उससे प्यास बुझाने की आशा करना व्यर्थ है।

तासों ही कछु पाइए, कीजे जाकी आस,

रीते सरवर पर गए, कैसे बुझे पियास।

अपनी साइकिल प्रिय सवारी

खुशियों की लगती फुलवारी,
अपनी साइकिल प्रिय सवारी।

सैर सपाटा करके आते,
बड़े मजे से मौज मनाते,
घर के सारे काम काज को,
बड़ी खुशी से हम निबटाते।
दो चक्कों की राजदुलारी,
अपनी साइकिल प्रिय सवारी।

घंटी उसकी ट्रिन–ट्रिन करती,
रफ्तार से पेंग वो भरती,
जब वो अपना वेग बढ़ाती,
तेज हवा से बातें करती।
मेरी उसकी गहरी यारी,
अपनी साइकिल प्रिय सवारी।

कभी–कभी जब वो गुस्साती,
पंचर होकर हमें सताती,
पर मिस्त्री के हाथ लगाते,
खुश होकर के वो मुस्काती।
कठिनाई से कभी न हारी ,
अपनी साइकिल प्रिय सवारी।

महेन्द्र कुमार वर्मा
भोपाल (मध्य प्रदेश)

सुन्दर ठिकाना

यह ऊँची बड़ी पहाड़ी है,
कहीं गड्ढ़ा कहीं झाड़ी है।
पेड़ों से यह है भरी हुई,
बरसों से यह है खड़ी हुई।

यहाँ का है मौसम सुहाना,
घूमने का सुन्दर ठिकाना।
आदमी यहाँ जो आते हैं,
जानवर कई दिख जाते हैं।

वन से गहरा गाँव का नाता,
कई तरह से काम में आता।
बादल रुकता आता पानी,
चारों तरफ होता धन–धानी।

ऊपर से पानी का गिरना,
बन जाता है प्यारा झरना।
इसके नीचे बहती नदियाँ,
बीत गई कई–कई सदियाँ।

अंकुश्री
नामकुम, रांची (झारखंड)

देवताओं का वृक्ष
देवदार

हिमालय का वृक्ष है देवदार। इसे देवताओं का वृक्ष भी कहा जाता है। देवदार के पेड़ ऊँचे हिमालय के पर्वतीय क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश, कश्मीर, उत्तराखंड से लेकर नेपाल तक पाए जाते हैं। देवदार का पेड़ तीन से चार हजार मीटर तक की ऊँचाई पर उगता है तब ऐसा लगता है कि आसमान को छू रहा है। भारत में गढ़वाल–कुमाऊँ, असम, कश्मीर में इसके बड़े घने जंगल हैं। नेपाल में भी देवदार के जंगल पाए जाते हैं। कहते हैं, पार्वती इसे अपने बेटे कार्तिकेय की तरह प्यार करती थीं और उसकी देखभाल करती थी। महाकवि कालिदास ने अपनी रचनाओं में देवदार के वृक्ष का बहुत उल्लेख किया है। देवदार वृक्ष को इतना प्यार शायद इसलिए मिला, क्योंकि यह हमेशा हरे रहने वाले वृक्षों की प्रजाति कॉनिफर का सबसे सुन्दर वृक्ष है। यह बहुत लम्बी उम्र वाला होता है और सबसे बड़े आकार तक पहुँचता है।

देवदार का वैज्ञानिक नाम **सीडरस दियोदारा** है। लोक भाषा में इसे दियार, केलो या कीलों कहा जाता है। इसकी पत्तियाँ पतली व नुकीली होती हैं। इसका घेरा ऊपर से नीचे तक त्रिकोणाकार होता है। इसमें एक मोटा तना होता है, जिसके चारों ओर पतली–पतली शाखाएँ ऊपर तक फैलती जाती हैं। देवदार की लकड़ी सुन्दर, हल्की और बड़ी टिकाऊ होती है और इसमें व इसकी जड़ों में एक सुगंधित तेल होता है। यही वजह है कि देवदार के वृक्ष में कभी कीड़ा नहीं लगता। देवदार की लकड़ी बहुत मजबूत होती है और बहुत महँगी बिकती है। किन्तु उसके काटने पर रोक लगी है। पहले देवदार की लकड़ी से रेलवे स्लीपर बनाये जाते थे, पर अब यह फर्नीचर और सन्दूक आदि के लिए ही इस्तेमाल की जाती है। इसकी बनी चीजें भी खराब नहीं होतीं।

खुद लकड़ी ही नहीं, इसका तेल भी बड़े काम का है। यह कीटनाशकों में डाला जाता है और मालिश के काम आता है। इसके अलावा यह नावों के जोड़ों को पक्का करने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। धार्मिक अनुष्ठानों में देवदार की लकड़ी का बड़ा महत्त्व है। हिमाचल प्रदेश के मन्दिरों के परिसरों, जैसे चम्बा के चौरासी मन्दिर में देवदार के 150 से 216 फीट ऊँचे पेड़ पाये जाते हैं। अगर वातावरण अनुकूल हो, तो देवदार की नयी पौध बड़े पेड़ों के नीचे अपने आप उग आती है। वैसे वन विभाग इसकी पौध को पॉलीथिन की थैलियों में उगाते हैं। देवदार की पौध रियायती दर पर उपलब्ध करायी जाती है। देवदार के जंगलों में नाना प्रकार के वन्य प्राणी भी पाये जाते हैं, जैसे बाघ, भालू, हिरण, मोनाल, ट्रैगोपान, बर्फानी फीजेंट आदि।

हिमालय के कच्चे पहाड़ अत्यधिक वन कटाई के कारण धसक रहे हैं, टूट–टूट कर गिर रहे हैं। इस कारण सरकार ने देवदार के पेड़ काटने पर रोक लगा रखी है ताकि देवदार पेड़ की जगह पत्थरों को पकड़े रहे और कम से कम कटान हो। चीड़, देवदार और खैर के जंगल वातावरण शुद्ध करते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं इस कारण हिमालय के पर्यावरण के लिए देवदार का पेड़ बहुत जरूरी है। देवदार के वृक्ष को देवतुल्य मानकर इसे नहीं काटा जाता है किन्तु कुछ वन माफिया देवदार के जंगलों के विनाश में लगे हैं। इस कारण हिमालय में भूस्खलन की घटनाएँ बढ़ रही है व पर्यावरण बिगड़ रहा है।

शिवम् सिंह
मनेथू कानपुर (उत्तर प्रदेश)

दस सवाल दस जवाब

(1) ये ऐतिहासिक इमारतें किन शहरों में स्थित है?

(2) राजस्थान के भरतपुर शहर की स्थापना किसने की?

(3) भारत में सबसे बड़ा पुस्तकालय कहाँ है?

(4) भारत की सबसे लम्बी नदी कौन सी है?

(5) भारत के किस राज्य की समुद्री सीमा सबसे लम्बी है?

(6) देश में मीठे पानी की सबसे बड़ी झील कौनसी है?

(7) किस शहर को 'पर्वतों की रानी' कहा जाता है?

(8) काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान किस राज्य में स्थित है?

(9) आन्ध्रप्रदेश के किस शहर में भारत का उपग्रह प्रक्षेपण केन्द्र है?

(10) भारत का सबसे लम्बा राष्ट्रीय राजमार्ग कौनसा है?

उत्तर इसी अंक में

- संध्या : हे भगवान! राजस्थान की राजधानी जोधपुर बना देना।
  माँ : संध्या, तुझे मालूम नहीं, राजस्थान की राजधानी जयपुर है।
  संध्या : पर माँ मैंने परीक्षा में जोधपुर लिख दिया।

- अध्यापक : तुमको पसीना कब निकलता है?
  नरेश : जब आपके हाथ में डंडा देखता हूँ।

विशेष – बाल पाठक भी चुटकुले भेज सकते हैं।

आओ पढ़ें : नई किताबें

यह एक किशोरोपयोगी उपन्यास है जिसमें पूरी पुस्तक में एक लम्बी कहानी है। उपन्यास के नायक अरुण का मायावी वृक्ष तक पहुँचना और उसकी रहस्यमयी अहितकारी बातों को जानकर उसे समूल नष्ट करने की साहसिक कहानी है। इस कहानी का सीधा सा एक संदेश है– ''जहाँ चाह, वहाँ राह।'' किशोरों को इसके रहस्य रोमांच उतार–चढ़ाव से पढ़ने का आनन्द मिलेगा और उनमें आत्मविश्वास जागृत होगा।

पुस्तक का नाम : धरोहर **लेखक :** सुकीर्ति भटनागर
मूल्य : 250 रुपये **पृष्ठ :** 112 **संस्करण :** 2022
प्रकाशक : साहित्यागार, जयपुर

यह पुस्तक शीर्षक के अनुरूप बालकों और किशोरों को जीवन मूल्यों के प्रति सचेत करती है। उनमें जोश व उत्साह भरती है। उन्हें जीवन संघर्ष के प्रति साहसी बनाती है। उत्तम भाव व पूर्ण शिल्प द्वारा रचित 24 बालगीतों की यह पुस्तक शिक्षाप्रद एवं प्रेरक है। अधिकतर गीत बालमन को स्पर्श करने वाले हैं। सुन्दर आवरण में सजी यह पुस्तक आकर्षित करती है।

पुस्तक का नाम : मन के पुष्प खिलाए रखिए **लेखक :** डॉ. आर. पी. सारस्वत
मूल्य : 130 रुपये **पृष्ठ :** 36 **संस्करण :** 2022
प्रकाशक : अविचल प्रकाशन, हल्द्वानी (उत्तराखंड)

दिमागी कसरत

शब्द सोपान की इन आकृतियों में चार अक्षर वाले सात–सात शब्द भरने हैं। इन सब शब्दों में एक अक्षर निश्चित स्थान पर चित्रानुसार है। इसमें बिना कोई परिवर्तन के संकेत के आधार पर सही शब्द खोजें और भरें।

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

उत्तर इसी अंक में

(1)

1	स			
2		स		
3			स	
4				स
5			स	
6		स		
7	स			

संकेत

1. हल, उत्तर
2. प्रसन्न मुद्रा
3. मौका, प्रसंग
4. अतीत, बीता हुआ
5. संसद का उच्च सदन
6. आकाश
7. नेता, अगुआ, एक कौम

(2)

1	र			
2		र		
3			र	
4				र
5			र	
6		र		
7	र			

संकेत

1. समुद्र, सागर
2. फैक्ट्री, उद्योगशाला
3. संदेश फैलाने वाला
4. अन्वेषण, खोज
5. व्यवहार
6. प्रतिबिम्ब, छाया
7. एक पवित्र महीना

हँसली का त्याग

"पापा, मुझे पॉलिटेक्निक में प्रवेश के लिए प्राचार्य की स्वीकृति मिल गयी है। तीन दिन में फीस भरनी है।" चेहरे के भाव प्रसन्नता की कहानी कह रहे थे। यह 1972 की बात है। पिताजी खेती किसानी करते थे। दादा जी द्वारा छोड़ी गई पुश्तैनी जमीन का मात्र 5 बीघा जमीन का टुकड़ा पिताजी के हिस्से में आया था। इसलिए घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। इसके अतिरिक्त मेरे तीन भाई और भी थे। जो सरकारी स्कूल में पढ़ते थे। उनका खर्चा था सो अलग।

"फीस के पैसे तो नहीं है।" पिता जी ने भारी मन से कहा। लगा जैसे चाँदनी की रोशनी ही मंद पड़ गई हो। दिमागी पारा ऊपर चढ़ गया। इससे पहले कि वह कुछ स्पष्टीकरण दे पाते, मैं गुस्से में तमतमा कर बोला– "आपके पास फीस के पैसे नहीं थे तो मुझे पॉलिटेक्निक में दाखिले के लिए भेजा ही क्यों था? इससे तो अच्छा मैं अनपढ़ रह जाता।'' पिता को मुझसे इस तरह की प्रतिक्रिया की आशा नहीं थी। यह बात चुभ गई। निर्णय के तराजू पर तोलने के थोड़ी देर बाद उन्हें लगा कि बेटे के सपनों पर आघात होने वाला है। सो उन्होंने तुरन्त माँ को आवाज दी।

"तुम्हारे गले में सोने की जो हँसली है, वह निकाल कर बेटे को दे दो।'' "वह सोने की हँसली का क्या करेगा? आप मेरे धैर्य की इतनी कड़ी परीक्षा न लें।" "मेरे पास इतनी बचत नहीं है कि इसकी फीस भर सकूँ। इसे बेच कर यह पॉलिटेक्निक की फीस भर देगा। घर के जेवर ऐसे ही आपातकाल के समय काम आते हैं।" पिताजी ने कहा तो चेहरे पर बिना कोई शिकन के माँ ने गले से हँसली उतारी और शीघ्र मेरे हवाले कर दी।

माँ के साथ मैं भारी मन से सुनार के पास जाकर हँसली बेच आया। फीस के पैसे मैंने अपने पास रखे। बाकी पिताजी को लौटा दिए। पिताजी के चेहरे पर जो संतोष के भाव मैंने देखे, मेरे मन में उनके प्रति श्रद्धा का भाव उमड़ आया। मैं अगले दिन राशि लेकर डीएआई टेक्निकल कॉलेज दयालबाग पहुँचा और फीस भर दी। इसके बाद मैंने प्रतिज्ञा ली कि पिताजी का सम्बल बनूँगा। मैंने लगन से काफी अच्छी पढ़ाई की और वार्षिक परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास कर रेलवे में इंजीनियर बन गया।

मगर सोचता हूँ कि पिताजी ने उस हँसली का त्याग मेरी फीस के लिए न किया होता तो शायद में रेलवे में ऑफिसर न होता। पिताजी को शत्–शत् नमन। उनके त्याग और बलिदान के लिए मेरा सिर आज भी श्रद्धा से झुक जाता है। पिताश्री में धरती सा धैर्य और आकाश की ऊँचाइयों को छूने के बुलन्द इरादों की प्रेरणा मुझे सदैव याद रहती है। मेरे साथ माँ ने त्याग की जो परिभाषा गढ़ी, वह अविस्मरणीय है। उसे मैंने अपने बच्चों के साथ भी अपनाया।

डॉ. रघुराजसिंह कर्मयोगी
कोटा (राजस्थान)

घुमक्कड़राम ने लिया इन्टरव्यू

उस दिन सुबह–सुबह पर्यावरण की कहानियाँ लिखने के लिए हाथ में कलम उठायी ही थी कि देखा, सामने से घुमक्कड़राम जी चले आ रहे हैं। बड़ा सा हरा कनटोपा पहने और भारी–भरकम लबादा ओढ़े घुमक्कड़राम जी के हाथों में इकतारा था। हौले–हौले संगीत के सुर छेड़ता हुआ तुन–तुन–तुन इकतारा। मेरे पास आते ही उन्होंने बड़ी चौड़ी मुसकान के साथ कहा– "मुझे मालूम है चन्दू भाई कि तुम्हारे दिल में धरती की वनस्पतियों, फूलों, पेड़ों, पहाड़ों, नदियों, परिंदों और जंगल के जानवरों के लिए बेपनाह प्यार है और ये ही सारी बातें तुम इस किताब में भी लिखना चाहते हो। पर क्या तुमने कभी प्रकृति से इंटरव्यू भी लिया है?"

"इन्टरव्यू, प्रकृति से!" मैं चौंका। सिर को दो–तीन बार झटका दिया, यह समझने के लिए कि वे आखिर कह क्या रहे हैं। इस पर घुमक्कड़राम जी हँसते हुए बोले– "हाँ–हाँ क्यों नहीं? चिड़ियों से, फूलों से, तितली से और हरे–भरे पेड़ से इंटरव्यू। क्या मुश्किल है इसमें? बल्कि मुझे तो इसमें बहुत आनन्द आया। कहो तो सुनाऊँ तुम्हें मैं यह अनोखा किस्सा?" "हाँ–हाँ, सुनाइए घुमक्कड़राम जी।" मैंने उत्सुकता से कहा तो झट घुमक्कड़राम जी के तुन–तुन–तुन इकतारे पर सुनाई दिया उनकी आपबीती से जुड़ा यह मजेदार किस्सा।...

उस दिन थी सर्दियों की प्यारी–प्यारी धूप। दूर तक गुनगुनी धूप की चादर बिछी थी। दिल में बड़ा सुकून पैदा करती हुई। आसपास फूल ही फूल खिले थे। खुशबुएँ बिखेरते हुए रंग–रंग के फूल। पेड़ हँस रहे थे, उनके पत्ते तक खुश होकर लुका–छिपी खेल रहे थे। ऐसे में भला किसकी तबीयत न होगी कि खुद को कहे– ''चलो भाई चलें, जरा घूमकर आएँ!'' फिर घुमक्कड़राम तो ठहरे घुमक्कड़राम। बचपन से ही घुमक्कड़ी के शौकीन। उन्होंने सोचा– ''वाह, आज तो बढ़िया मौसम है। जरा दूर तक घूमकर आना चाहिए।''

और बस, घुमक्कड़राम जी चले तो चलते ही गए। उन्हें सचमुच बहुत मजा आ रहा था। लग रहा है, इस प्यारे–प्यारे मौसम में प्रकृति के कुछ अलग ही रंग

खिल उठे हैं, जो उन्होंने पहले कभी देखे ही नहीं थे। हर ओर एक सुरीला राग था। अब तो जी, घुमक्कड़राम जी कुछ इस कदर उत्साहित हुए कि तरंग में आकर सोचने लगे– ''अरे भई घुमक्कड़राम, जरा इस रंग–रँगीली प्रकृति दीदी का एक बढ़िया सा इंटरव्यू तो करना ही चाहिए। आखिर हमें मालूम तो पड़े कि वह इतने बढ़िया–बढ़िया, दिल लुभा लेने वाले रंग कहाँ सँभालकर रखती है? ऐसे रंग जो कभी किस्म–किस्म के रंग–बिरंगे फूलों में छलक पड़ते हैं तो कभी चिड़ियों और तितलियों में। और तब लगता है, कि बस जादू–मंतर ही हो गया।''

अभी घुमक्कड़राम जी यह सोच ही रहे थे कि तभी उन्हें नजर आई एक चिड़िया। नीली सी खूबसूरत चिड़िया। मजे में पंख फड़फड़ाती हुई। घुमक्कड़राम सोचने लगे, भला इस सुन्दर चिड़िया का नाम क्या है? पर बहुत सिर खुजाने के बाद भी उन्हें चिड़िया का नाम याद नहीं आया। मगर चिड़िया प्यारी इतनी थी कि वे उसके बारे में सोचे बगैर रहा ही नहीं जा रहा था। आखिर उनके दिमाग में एक बढ़िया आइडिया आया। उन्होंने सोचा– ''सबसे पहले तो इस नीली चिड़िया का ही इंटरव्यू करना चाहिए। तब चिड़िया का नाम ही नहीं, बहुत सी और चीजें भी पता चल जाएँगी।'' 'चिड़िया का इंटरव्यू?' सोचकर उन्हें बड़े जोर की हँसी आई। पर मन में चिड़िया और प्रकृति के रहस्यों के बारे में जानने की इच्छा इतनी ज्यादा थी कि आखिर उन्होंने चिड़िया का इंटरव्यू करने का एकदम पक्का फैसला कर लिया।

घुमक्कड़राम जी धीरे–धीरे चलते हुए जा पहुँचे उस खूबसूरत नीली चिड़िया के पास। जाकर उससे पूछा– "सुनो जी प्यारी–दुलारी चिड़िया रानी, सुनो! तुम्हें अपने पंख अच्छे लगते हैं?" कहते–कहते उन्होंने झटपट अपना पेन और डायरी खोल ली थी। पूरे, पक्के इंटरव्यूकार का पोज! चिड़िया हँसकर बोली– "क्या तुम मेरा इंटरव्यू ले रहे हो घुमक्कड़राम जी? क्या मैं ही बची थी इंटरव्यू के लिए?...क्या आज तुम खाली हो बिलकुल? कोई कहानी का आइडिया नहीं सूझा!" "नहीं–नहीं!" घुमक्कड़राम जी को भी हँसी आ गई। बोले– "चिड़िया रानी, मैं तो यों ही मेरा मतलब, बस यों ही दो–चार बातें करना चाहता हूँ।" "ओहो, तो बात को घुमाना भी सीख लिया?'' चिड़िया हँसी। फिर गरदन हिलाकर बोली– "अच्छा तो पूछो! फिर से पूछो अपना सवाल।"

घुमक्कड़राम जी ने फिर से दोहराया– "चलो, पहले तो यही बताओ कि क्या तुम्हें अपने पंख अच्छे लगते हैं?" "हाँ, बहुत।" चिड़िया खुशी से चहचहाई। बोली– "पंख भला किसे अच्छे नहीं लगते? आपके होते तो आपको भी अच्छे लगते। फिर मेरे लिए तो यही सब कुछ हैं। इनके सहारे मैं आकाश में उड़ती जो हूँ।" "आकाश! लेकिन आकाश में ऐसा क्या है? आकाश क्यों अच्छा लगता है तुम्हें? जरा बताओगी चिड़िया रानी!" घुमक्कड़राम जी ने एकदम बुद्धू की तरह पूछा।

इस पर चिड़िया को बड़े जोर की हँसी आ गई। वह हँसते हुए बोली– "वाह, इतना भी नहीं जानते घुमक्कड़राम जी? आकाश में उड़ने का अपना मजा है, आजादी है। इसलिए आकाश मेरे लिए जिन्दगी है। आप आदमी लोगों के पास पंख नहीं हैं, तो आदमी गुब्बारों में बैठकर उड़ते हैं। हवाई जहाजों में उड़ते हैं। बहुत सारे लोग किस्से–कहानियों के जरिए उड़ते हैं और उड़ते–उड़ते कहाँ से कहाँ पहुँच जाते हैं। पर मेरे पास तो असली पंख हैं तो मैं क्यों न उड़ूँ? और येल्लो, मैं उड़ी!" कहते–कहते चिड़िया खिलखिलाई और फिर फुर्र से उड़ी।

अपने चुस्त, चंचल पंखों से हवा में थरथराहट पैदा करते हुए वह दूर, बहुत दूर चली गई। देखते–देखते नजरों से ओझल हो गई। घुमक्कड़राम जी बेचारे अपना–सा मुँह लेकर रह गए। सोच रहे थे, चिड़िया से यह सवाल पूछेंगे, वह पूछेंगे। मगर सारे के सारे सवाल धरे रह गए। अभी तो इंटरव्यू की शुरूआत ही हुई थी कि चिड़िया यह जा और वह जा। घुमक्कड़राम के सवालों के फंदे से वह बहुत दूर जा चुकी थी। तो अब किससे सवाल पूछें? सोचते हुए घुमक्कड़राम जी ने अपना माथा खुजाया।

इतने में उन्हें नजर आ गया एक सुन्दर सा लाल गुलाब। एकदम सुर्ख लाल। हवा उसे अपनी शाख पर हौले–हौले झूला झूला रही थी और लाल गुलाब मस्ती से झूल रहा था, जैसे हवा का मस्ती से पींगें देना उसे अच्छा लग रहा हो। ''ऐसा सुख तो राजसिंहासन पर भी क्या मिलेगा?'' उसने सोचा।

बूझो तो जानें

1

अन्त हटे तो कूल रहूँ मैं,
प्रथम हटे तो लर।
ठंडी ठंडी हवा चलाता
कहलाता ...।

5

मेरे बिन नहीं है जीवन,
नहीं है मेरा सानी,
लोगों की मैं प्यास बुझाता,
कहते मुझको ...।

2

चाशनी में डूबा रहता,
किये बगैर मैं हल्ला,
बंगाल की हूँ एक मिठाई,
मैं कहलाता...।

3

लम्बा नापूँ, चौड़ा नापूँ,
ऊँचा नापूँ गहरा नापूँ।
बच्चे करते मुझसे खेल,
मैं कहलाती ...।

4

घर में मेरा आना-जाना,
सुन लो मेरे छोटू भैया,
मेरे पंख सुनहरे सुन्दर
लोग कहे मुझे ...।

उत्तर इसी अंक में

डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव, कालपी जालौन (उत्तर प्रदेश)

दूर–दूर तक उसकी खुशबू फैली हुई थी। घुमक्कड़राम जी ने सोचा– ‘‘वाह जी वाह, इस लाल गुलाब के क्या ठाट हैं! चलो, जरा इसी से दो बातें कर लें।’’ उन्होंने जरा नजदीक जाकर गुलाब से पूछा– ”क्यों भई सुर्ख गुलाब, तुम्हें अपनी खुशबू प्यारी है?“ और फिर से हाथ में डायरी ओर पेन सँभाल लिया। ”हाँ–हाँ, जरूर।“ गुलाब बोला– ”भला कौन सा फूल होगा, जिसे अपनी खुशबू प्यारी न हो?“ ”क्यों भला!“ घुमक्कड़राम जी ने पूछ लिया फिर एक बुद्धूपन वाला सवाल और अचकचाकर गुलाब की ओर देखने लगे।

इस पर गुलाब ने थोड़ा तरस खाकर घुमक्कड़राम जी की ओर देखा, मानो कह रहा हो– ”आप इतने बुद्धू क्यों हैं घुमक्कड़राम जी? क्या ऐसे ही इन्टरव्यू लिया करते हैं आप?“ फिर आखिर अपने दिल की बात समझाते हुए उसने कहा– ”देखो घुमक्कड़राम जी, मैं आपकी तरह कहानियाँ और किताबें तो नहीं लिखता। न तानसेन की तरह सितार पर राग भैरव और पीलू गा सकता हूँ। मेरे पास तो जो कुछ है, वह यह खुशबू ही है। इस खुशबू के सहारे ही तो मैं यहाँ अपनी जगह रहकर ही, दूर–दूर तक सबको अपनी खुशियों से महका देता हूँ। खुशबू मेरा जीवन है। खुशबू मेरी आजादी है। खुशबू मेरी अमरता का रहस्य है। तुम...तुम समझ गए न मेरी बात?“ कहकर फूल खिल–खिल हँसने लगा। घुमक्कड़राम जी अगला सवाल पूछने की तैयारी कर रहे थे। पर वे तरकश से तीर निकालते, इसका मौका ही नहीं दिया गुलाब ने। वह तो एकदम हँसी का गोलगप्पा बना हुआ था। ऐसे में भला उसे क्या सुनाई देती घुमक्कड़राम की बात?

घुमक्कड़राम जी समझ गए, उन्होंने जरा बेवकूफी का सवाल पूछ लिया है। अगली बार सँभलकर इंटरव्यू करेंगे। मगर तब तक घुमक्कड़राम जी को एक बड़ी सी, सुन्दर रंग–बिरंगी तितली दिखाई दे गई थी और उनका ध्यान उधर ही चला

देखें पृष्ठ 28...

प्रौद्योगिकी से ही

भारत की तकनीकी प्रगति को चिह्नित करने और विभिन्न क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी के विकास को बढ़ावा देने के लिए 11 मई को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया जाता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय देश में नवाचार और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अर्जित उपलब्धियों के उपलक्ष्य में वर्ष 1999 से प्रत्येक वर्ष 11 मई को इस दिवस का आयोजन करता है। इस अवसर पर देशभर में राष्ट्र की सेवा में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की सफलता का उत्सव मनाया जाता है।

क्या आप जानते हो, यह दिवस 11 मई को क्यों मनाते हैं? उस दिन भारत ने प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि प्राप्त की। यह राजस्थान के पोकरण में 11 से 13 मई 1998 तक आयोजित आपरेशन शक्ति (पोकरण–2) परमाणु परीक्षण के पाँच परमाणु परीक्षणों में से पहले परीक्षण की याद में हर वर्ष मनाया जाता है। आपरेशन का नेतृत्व पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने किया था, जो तब रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के निदेशक थे। पोकरण–2 के रूप में परमाणु परीक्षण करने के बाद, भारत को तत्कालीन प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा परमाणु शक्ति संपन्न देश घोषित किया गया था, जिससे भारत को राष्ट्रों के परमाणु क्लब में शामिल होने वाला छठा राष्ट्र तथा परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) से नहीं जुड़ने वाला पहला देश बना।

हर साल 11 मई को भारत के तकनीकी विकास बोर्ड द्वारा उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए समर्पित वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकीविदों को पुरस्कार दिया जाता है। इस पुरस्कार के तहत 10 लाख रुपये और ट्राफी भी दी जाती है। इस दिन हमारे देश की ताकत, कमजोरियों और लक्ष्यों पर विचार किया जाता है, जिससे प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में देश को सही जानकारी प्राप्त हो सके। इससे भारत की प्रौद्योगिकीय क्षमता के विकास को बढ़ावा भी मिलता हैं।

भारत ने तो टेक्नोलाजी को सामाजिक न्याय, सशक्तीकरण, समावेश, सक्षम सरकारी तंत्र और

देश का विकास

पारदर्शिता का माध्यम बनाया है। जन्म प्रमाणपत्र से लेकर बुढ़ापे की पेंशन तक की अनेक सुविधाएँ आज ऑनलाइन हैं। 300 से अधिक केंद्र और राज्य सरकार की सेवाओं को उमंग एप के माध्यम से एक प्लेटफार्म पर लाया गया है। देशभर में 3 लाख से अधिक कामन सर्विस सेंटर्स से गाँव–गाँव में ऑनलाइन सेवाएँ दी जा रही हैं।

अगर देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुन्दर–मन वाले लोगों का देश बनाना है तो, हमारा दृढ़तापूर्वक मानना है कि समाज के तीन प्रमुख सदस्य माता, पिता और शिक्षक ही यह कर सकते हैं। आज जरूरत इस बात की है कि हम छात्रों को नये–नये प्रयोग व आविष्कारों के लिए प्रोत्साहित करें। माता–पिता को बच्चों की जिज्ञासा व सृजनशक्ति की अवहेलना नहीं करनी चाहिए बल्कि उनको खाली समय में अपनी रुचि के अनुसार नई चीजें बनाने के लिए प्रेरित करते रहना चाहिए।

आज के महान दिवस पर हमें मिसाइल मेन डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को स्मरण करना चाहिए। वह देश के बाल एवं युवा पीढ़ी के प्रेरणास्रोत थे। डॉ. कलाम की पूरी जिन्दगी शिक्षा को समर्पित थी। बच्चों से रूबरू होना, स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटी में जाना व छात्र–छात्राओं से प्रेरणादायक बातें करना, डॉ. कलाम को बेहद पसन्द था। उनका पूरा जीवन अनुभव और ज्ञान का निचोड़ था। डॉ. कलाम का कहना था कि अनजानी राह पर चलना ही साहस है। जब दिल में सच्चाई होती, तब चरित्र में सुन्दरता आती है। चरित्र में सुन्दरता से घर में एकता आती है।

डॉ. कलाम जानते थे कि किसी व्यक्ति या राष्ट्र के समर्थ भविष्य के निर्माण में शिक्षा की क्या भूमिका हो सकती है? उन्होंने हमेशा देश को प्रगति के पथ पर आगे ले जाने की बात कही। उनके पास भविष्य का एक स्पष्ट खाका था, जिसे उन्होंने अपनी पुस्तक ''इंडिया 2020 : ए विजन फॉर द न्यू मिलिनियम'' में प्रस्तुत किया। इस पुस्तक में उन्होंने लिखा कि भारत को वर्ष 2020 तक एक विकसित देश और नॉलेज सुपरपॉवर बनाना होगा। उनका कहना था कि देश की तरक्की में मीडिया को गंभीर भूमिका निभाने की जरूरत है। नकारात्मक खबरें किसी को कुछ नहीं दे सकती लेकिन सकारात्मक और विकास से जुड़ी खबरें उम्मीदें जगाती हैं।

प्रदीप कुमार सिंह
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

> अवलोकन और प्रयोगों के माध्यम से अर्जित नए ज्ञान को व्यवस्थित रूप से तलाशने की प्रक्रिया को विज्ञान (Science) कहते हैं। भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान एवं खगोल विज्ञान इसकी प्रमुख शाखाएँ हैं।
>
> मानव जीवन को सरल और सुविधाजनक बनाने के विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति में तथा विभिन्न व्यावहारिक अनुप्रयोगों में वैज्ञानिक ज्ञान को लागू करने की प्रक्रिया को प्रौद्योगिकी (Technology) कहते हैं। चिकित्सा, कृषि विज्ञान, इंजीनियरिंग, ऊर्जा, संचार, परिवहन आदि इसकी मुख्य शाखाएँ हैं।

'घुमक्कड़राम ने लिया इन्टरव्यू' पृष्ठ 25 का शेष...

गया। तितली फूल–फूल पर बैठती और फिर इस कदर इठलाकर उड़ती कि घुमक्कड़राम का दिल बाग–बाग हो गया। मन ही मन बोले– "भई, सुन्दरता तो यह है। प्रकृति ने अपनी सुन्दरता का सारा खजाना तो तितली को ही दे दिया है। मुझे पहले ही तितली से इंटरव्यू करना चाहिए था।" घुमक्कड़राम जी धीरे–धीरे चलकर तितली के पास जा पहुँचे और पेन हाथ में लेकर झट से पूछ लिया– "सुनो तितली सुनो, क्या तुम्हें अपने रंग बहुत पसन्द हैं? क्या मुझे बताओगी कि तुम्हें अपने रंग क्यों अच्छे लगते हैं?"

"ये सबको भाते जो हैं!" तितली ने मंद–मंद मुसकुराते हुए बड़ी बाँकी अदा से कहा– "यही रंगों का आनन्द बाँटने के लिए ही तो मैं एक जगह से दूसरी जगह उड़ती रहती हूँ। इसी से मेरे पंखों में लय है, नरमी है हलकापन है। इसी वजह से मैं उड़ते–उड़ते कभी नहीं थकती। मेरे लिए जिन्दगी का मतलब चलते रहना और सबको खुशियाँ बाँटना है।" घुमक्कड़राम जी ने डायरी खोलकर नोट किया और अगला सवाल पूछने वाले थे कि देखा, वह तितली इठलाती हुई गुलाब के फूल पर बैठी है और दोनों किसी बात पर जोर–जोर से हँसते हुए मजा ले रहे हैं। "लगता है, दोनों मिलकर मेरा ही मजाक उड़ा रहे हैं। अब तो यहाँ से चलने में ही खैर है।" घुमक्कड़राम जी ने मन ही मन कहा और वहाँ से फौरन चल पड़े।

अब तक घुमक्कड़राम का इन्टरव्यूकार पूरी तरह जाग गया था और वे समझ नहीं पा रहे थे कि किस पर करें अपने सवालों की बौछार? तभी उनका ध्यान सामने के बरगद की ओर गया। हवा में थर–थर–थर नाचते पत्तों का बाजा बजाता बरगद का पेड़ अपनी पूरी मस्ती में था और अपनी जगह खड़ा हुआ भी हवा में झूम रहा था। "तो ठीक है, ठीक है... बरगद से ही बात की जाए। बरगद का यह पेड़ छतनार ही नहीं, दिलदार भी है। यही है प्रकृति का सच्चा पुत्र! खुलकर धूप हवा बारिश का आनंद लेने वाला देवदूत!...असल में शुरू में मुझे इसी से बात करनी चाहिए थी।"

घुमक्कड़राम जी धीरे से बुदबुदाए और आ पहुँचे पेड़ के पास। बरगद का विशाल पेड़ चुप–चुप खड़ा था, पर हरे रंग का बड़ा सा कनटोपा लगाए घुमक्कड़राम जी को देखकर उसके चेहरे पर एक मीठी सी हँसी आ गई। वह घुमक्कड़राम जी को देर तक आसपास चिड़िया, गुलाब, तितली वगैरह–वगैरह का इंटरव्यू लेते देख रहा था। शायद वही देखकर उसे मजा आ रहा था। या क्या जाने, घुमक्कड़राम जी के बुद्धूपन पर तरस खाकर हँस रहा हो!

बरगद के पास जाकर घुमक्कड़राम जी ने लम्बी जोहार की। जोश में आकर कहा– "राम–राम दद्दा...राम–राम!" "राम–राम!" बरगद ने भी उतने ही भारी गले से कहा जैसे गले में चक्की बाँध रखी हो। पर उसकी आवाज में प्यार था। घुमक्कड़राम जी ने कहा– "बरगद दादा, तुम तो वर्षों से अपनी जगह यों ही खड़े हो। बिलकुल चल–फिर नहीं पाते। फिर भी बताओ, क्या तुम आजादी का मतलब जानते हो?...और दद्दा, जरा यह भी बताना कि क्या तुमने अपनी जिन्दगी में कोई खुशी महसूस की है?"

बरगद हँसकर बोला– "अजी सुनो जी घुमक्कड़राम जी, जरा सुनो मेरी पूरी बात ध्यान से। असल में चिड़िया ने जो कहा है और गुलाब के फूल और तितली ने जो कुछ कहा है, वह सब मैंने सुना है

और वह सब सही है। चिड़िया के पंखों का अपना आनन्द है, गुलाब की खुशबू का अपना आनन्द है, तितली की सुन्दरता का अपना आनन्द है। सबके लिए जीवन में खुशी और आनन्द का अपना–अपना मतलब है और ये सभी मुझे भी प्यारे हैं, बहुत प्यारे। पर मेरे लिए जीवन में खुशी और आजादी का मतलब कुछ और है!"

"कुछ और मतलब?" घुमक्कड़राम जी ने बरगद की बातों की धारा में बहते हुए पूछ लिया। "कुछ और मतलब यानी एक पक्का, बड़ा पक्का इरादा! मैं समझता हूँ, हर किसी का अपनी जिन्दगी में कोई एक पक्का इरादा होना चाहिए। इसी को मैं तपस्या कहता हूँ। एक लम्बी और कठिन तपस्या। तपस्या का मतलब तो तुम समझते ही होगे! अपने लिए कुछ न रखते हुए, सबका सब दूसरों को दे डालना। कोई पत्थर भी मारे, तो उसे माफ करके फल से उसकी झोली भर देना। कहने को यह छोटी सी बात है, पर भाई घुमक्कड़राम जी, मैं सिर्फ इतना कहूँगा कि इसके लिए बड़ा दिल चाहिए। आसमान जितना बड़ा!"

कहते–कहते पेड़ भावुक हो गया, जैसे उसका गला कुछ रुँध गया हो। आवाज भी कुछ भर्रा सी गई। उसे काबू में करते हुए उसने कहा– "अरे भई घुमक्कड़राम जी, तुम्हें इतना तो पता ही होगा कि मैं कहीं आता–जाता नहीं, पर इससे क्या फर्क पड़ता है? दुनिया में सब जगह लोग मेरे फलों को खाते और सराहते हैं। पक्षी मुझ पर बसेरा करते हैं, आश्रय लेते हैं और दुआएँ देते हैं। मुझे इससे बढ़कर कोई दूसरा सुख नहीं लगता। क्या यह खुशी कोई छोटी खुशी है?"

घुमक्कड़राम जी ने मन ही मन पेड़ को प्रणाम किया। चिड़िया, फूल और तितली को भी धन्यवाद दिया। उनके सामने सबको खुशियाँ बाँटते हुए, हँसी–खुशी जिन्दगी जीने का बहुत बड़ा अर्थ खुल गया था। घुमक्कड़राम जी ने अपने आप से कहा– "जीवन में सच्ची खुशी पाने के लिए खुशी देनी भी पड़ती है और खुशी देने के लिए भीतर से बड़ा होना होता है। जब हमारे इरादे बड़े होते हैं और हम दूसरों को कुछ देना सीख जाते हैं, तभी हम समझ पाते हैं कि किसी छोटी सी खुशी का भी कितना बड़ा मतलब है? और तभी हम भीतर से बड़े होने लगते हैं।"

"जी हाँ, घुमक्कड़राम जी, ठीक समझा! जब हम देना सीख जाते हैं, तभी हम भीतर से बड़े होने लगते हैं और बिना भीतर से बड़े हुए बाहर से बड़े होने का कोई सुख नहीं। बिलकुल नहीं!" कहते–कहते पेड़ के चेहरे पर अजब नूरानी हँसी बिखर गई। "काश, मैं भी ऐसा ही हँसी–खुशी का एक दिन बिता पाऊँ और एक दिन क्यों, पूरा जीवन!" घुमक्कड़राम ने मन ही मन कहा, तो उनके चेहरे पर खुशी की किरणें झिलमिलाने लगीं और कुछ ही देर में फिर से मस्ती के सुर में झूमता उनका तुन–तुन इकतारा भी बज उठा–

तुन–तुन, तुन–तुन इकतारा,
सुन–सुन, सुन–सुन इकतारा,
चंदा बन तू या तारा...
यही सिखाता इकतारा,
तुन–तुन, तुन–तुन इकतारा...!

मैंने देखा, घुमक्कड़राम जी जो नहीं कह पा रहे थे, वह उनका इकतारा कह रहा था। घुमक्कड़राम जी का प्रकृति के इंटरव्यू वाला अनोखा किस्सा खत्म हो चुका था और अब सच्ची खुशी के नूर से उनका चेहरा झिलमिल कर रहा था। फिर पता नहीं कब, अपने तुन–तुन इकतारे के साथ गाते हुए घुमक्कड़राम जी विदा हुए।

प्रकाश मनु
फरीदाबाद (हरियाणा)

प्रेरक वचन

ऐसी कोई महान प्रतिभा नहीं है, जिसमें लगन का सम्मिश्रण न हो।

❖

चोर से जैसी सावधानी बरतते हो, वैसी ही क्रोध से भी बरतो।

❖

शिक्षित मनुष्य अशिक्षित मनुष्यों से उतने ही श्रेष्ठ हैं, जितने जीवित मनुष्य मृतकों से।

❖

सच्चे मित्र हीरे की तरह कीमती और दुर्लभ होते हैं, झूठे दोस्त पतझड़ की पत्तियों की तरह हर जगह मिलते हैं।

❖

पक्के ज्ञान की एक मात्र पहचान है– सीखने की शक्ति।

अरस्तु

माँ की छुट्टी

माँ तुम कल छुट्टी कर लेना,
कामों से कुट्टी कर लेना।

पापा तो इतवार मनाते,
हम भी नहीं स्कूल को जाते।
पर तुमको न कोई अवकाश,
फुरसत नहीं तुम्हारे पास।

कल तुम बस आराम से सोना,
मिलकर हमीं बनाएँ खाना।
पापा करेंगे साफ सफाई,
हम लाएँगे सभी दवाई।

हफ्ते में मिले एक दिन ऐसा,
काम वालों को मिलता जैसा।
हरदम व्यस्त रहो ना तुम,
मत हम में हो जाओ गुम।

आलोक कुमार मिश्रा
दिल्ली

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

अब कभी गलती नहीं करेंगे

आज स्कूल की छुट्टी थी। दिनेश, विवेक और राघव ने आपस में मोबाइल पर बात कर योजना बनाई कि आज सोनी बाग में अमरूद खाने चलेंगे। तीनों दोस्त सुभाष चौराहे पर अपनी–अपनी साइकिल से ठीक ग्यारह बजे सुबह इकट्ठे हो गए। सुभाष चौराहे से तीनों दोस्त चल दिए सोनी बाग की तरफ। सोनी बाग अमरूदों के पेड़ों के कारण बहुत चर्चित था। तीनों लगभग दस मिनट में सोनी बाग पहुँच गए।

एक बार पहले भी तीनों दोस्त सोनी बाग में चुपचाप जाकर अमरूदों की चोरी कर चुके थे। उस समय सोनी बाग के माली की नजर से वे तीनों बच गए थे। इसीलिए आज फिर से तीनों मित्रों ने अमरूद के बगीचे में जाने का इरादा बना डाला।

विवेक बोला– ''देखो भाई, मैं बाग के पिछवाड़े से बगीचे के अन्दर जाता हूँ। मुझे माली नजर नहीं आया या कोई रखवाला नहीं दिखायी दिया तो मैं दो बार सीटी बजाऊँगा। अगर बाग में कोई नजर आया तो एक बार सीटी बजाऊँगा। सीटी सुनकर आगे का काम करना।'' विवेक की बात पर राघव और दिनेश एक साथ बोल उठे– ''हाँ, यह ठीक रहेगा। हमारी टीम में एक तू ही बहादुर है। सबसे पहले तू ही बाग में जा। बाद में हम लोग आयेंगे।''

अपनी तारीफ सुनकर विवेक खुश होकर कहने लगा– ''हाँ भाइयो, अब मैं बाग में अपनी एंट्री देता हूँ। तुम लोग भी सावधान रहना।'' विवेक बाग के पिछवाड़े से बाग में घुस गया। यहाँ उसे कोई नजर नहीं आया। इसलिए उसने दो बार जोर से सीटी बजाई। विवेक अपने मुँह से ही बहुत जोर की सीटी बजाने में माहिर था। कक्षा में सीटी बजाने पर उसे मास्टर जी द्वारा कई बार सजा मिल चुकी थी।

जैसे ही विवेक ने सीटी बजाई वैसे ही राघव, दिनेश से बोला– ''चलो यार, अब हम लोग भी अमरूद खाने बाग के भीतर चलते हैं।'' दिनेश ने हामी भरते हुए कहा– ''हाँ भाई, अब तो रास्ता क्लीयर है। लगता है आज बाग में कोई रखवाला नहीं है।''

दिनेश और राघव भी बाग के पिछवाड़े बनी दीवार फाँद कर बाग के भीतर दाखिल हो गए। पेड़ों पर लगे बड़े–बड़े अमरूद देखकर तीनों दोस्तों के मन में लालच आ गया था। उन्होंने पहले तो पेड़ों से तोड़कर वहीं बैठकर बड़े मजे से अमरूद खाएँ। फिर दिनेश बोला– ''यार, अब दस–बीस अमरूद घर के लिए भी तोड़ लेते हैं।''

''हाँ, तू चिन्ता न कर, बड़े मजे से अमरूद तोड़ ले। आज बाग का रखवाला भी नजर नहीं आ रहा है।'' विवेक ने दोनों दोस्तों को तसल्ली देते हुए कहा। दोनों दोस्त अपनी जेबों में अमरूद तोड़–तोड़कर डालने लगे। तभी अचानक से अपने कुत्ते के साथ सोनी बाग का रखवाला शेरसिंह आ पहुँचा। उसने विवेक,

दिनेश और राघव को अमरूद तोड़ते हुए रंगे हाथ पकड़ लिया था। तीनों दोस्तों ने वहाँ से भागने की बहुत कोशिश की। पर कुत्ते के डर से वे वहाँ से भाग नहीं पाए। कुत्ता भी अपनी तेज नजरों से तीनों को घूर रहा था। अब क्या था! शेरसिंह ने राघव, दिनेश और विवेक से उनके पिताजी के मोबाइल नम्बर पूछे। मजबूर होकर तीनों को अपने–अपने पिताजी के मोबाइल नम्बर बताने पड़े।

शेरसिंह ने तीनों दोस्तों के पिताजी से कहा– ''आपके बच्चे हमारी कैद में हैं, इन्होंने हमारे बाग से अमरूदों की चोरी की है। आप अगर चाहते हैं कि आपके बच्चों की रिपोर्ट पुलिस से न की जाए तो एक घंटे में सोनी बाग आ जायें, नहीं तो हम तीनों बच्चों को पुलिस को सौंप देंगे।'' मोबाइल पर जैसे ही संदेश मिला। तीनों दोस्तों के पिताजी घबरा कर शीघ्रता से सोनी बाग पहुँच गये। अपने–अपने पिताजी को देखकर तीनों मित्र खूब जोर–जोर से रोने लगे।

तब विवेक के पिताजी बोले– ''ये बच्चे अभी से चोरी करने लगे, क्या इन्हें घर में अमरूद खाने को नहीं मिलते। चोरी करना बड़ा पाप है।'' राघव के पिताजी बोल उठे– ''मैं तो हर संडे अमरूद और पपीता जरूर लाता हूँ। लेकिन क्या पता था हमारे बच्चे अमरूदों की चोरी करेंगे। चोरी करना तो कितनी गन्दी बात है।''

अभी बच्चों के पिताजी अपनी–अपनी बात कर ही रहे थे तब तक शेरसिंह बोला– ''आप लोग हमें अच्छे घरों के लगते हैं इसलिए मैं इन बच्चों को चोरी के लिए माफ करता हूँ। पर आप लोग देखिए इन बच्चों ने अमरूद तोड़–तोड़कर खाएँ और जेबों में अमरूद भरकर भी ले जा रहे थे। आप ही बताएँ बच्चों का चोरी करना कोई अच्छा काम है?'' विवेक, राघव तथा दिनेश रोते–रोते शेरसिंह से माफी माँगने लगे। ''दादाजी, हम लोगों को माफ कर दीजिए। आगे से हम कभी चोरी नहीं करेंगे। हम नासमझी में गलती कर बैठे। हमने आगे–पीछे कुछ नहीं सोचा।''

बच्चों की बात सुनकर शेरसिंह भावुक हो उठा, उसने कहा– ''ठीक है बच्चो! हम तुम्हारी पहली गलती को माफ करते हैं। आगे से कभी कोई गड़बड़ नहीं होनी चाहिए।'' तीनों मित्र एक साथ बोल पड़े– ''हाँ दादाजी, अब कभी गलती नहीं होगी। हमें माफ कर दीजिए।''

राघव, दिनेश और विवेक के पिताजी ने आपस में सलाह की। अमरूदों के नुकसान को देखकर उन्होंने पाँच सौ रुपये शेरसिंह को दिए। पहले तो वह रुपये नहीं ले रहा था, पर बहुत कहने पर उसने रुपये ले लिए। तीनों मित्रों ने अपने–अपने पिताजी से माफी माँगी कि वे अब कभी गलती नहीं करेंगे।

ऋषि मोहन श्रीवास्तव
ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है, इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ-नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

		2	4		9			
9		4		6	7		2	
3				1	5			
1	2					6		
	4	9	3		1	5	7	
		5					4	3
			1	4				8
	3		9	5		2		4
					6	9		

उत्तर इसी अंक में

व्हाट्सएप कहानी

एक बार दो आदमी एक मन्दिर के पास बैठे गपशप कर रहे थे। वहाँ अँधेरा छा रहा था और बादल मंडरा रहे थे। थोड़ी देर में वहाँ एक आदमी आया और वह भी उन दोनों के साथ बैठकर बातें करने लगा। कुछ देर बाद वह आदमी बोला उसे बहुत भूख लग रही है, उन दोनों को भी भूख लगने लगी थी। पहला आदमी बोला– ''मेरे पास 3 रोटी हैं।'' दूसरा बोला– ''मेरे पास 5 रोटी हैं।'' हम तीनों मिल बाँट कर खा लेते हैं। उसके बाद सवाल आया कि 8 (3+5) रोटी तीन आदमियों में कैसे बाँट पाएँगे ?

पहले आदमी ने राय दी कि ऐसा करते हैं कि हर रोटी के 3 टुकड़े करते हैं, अर्थात् 8 रोटी के 24 टुकड़े (8x3=24) हो जाएँगे और हम तीनों में 8–8 टुकड़े बराबर बराबर बँट जाएँगे। तीनों को उसकी राय अच्छी लगी और 8 रोटी के 24 टुकड़े करके प्रत्येक ने 8–8 रोटी के टुकड़े खाकर भूख शान्त की और फिर बारिश के कारण मन्दिर के प्राँगण में ही सो गए। सुबह उठने पर तीसरे आदमी ने उनके उपकार के लिए दोनों को धन्यवाद दिया और 8 रोटी के टुकड़ों के बदले दोनों को उपहार स्वरूप 8 सोने के सिक्के देकर अपने घर की ओर चला गया।

उसके जाने के बाद दूसरे आदमी ने कहा– ''हम दोनों 4–4 सिक्के बाँट लेते हैं।'' पहला आदमी बोला– ''नहीं मेरी 3 रोटी थी और तुम्हारी 5 रोटी थी, अतः मैं 3 सिक्के लूँगा, तुम्हें 5 सिक्के मिलेंगे।'' इस पर दोनों में बहस होने लगी। इसके बाद वे दोनों समाधान के लिये पुजारी के पास गए। उन्हें अपनी समस्या बताई तथा समाधान के लिए प्रार्थना की।

पुजारी भी असमंजस में पड़ गया, दोनों दूसरे को ज्यादा देने के लिए लड़ रहे हैं। पुजारी ने कहा– ''तुम लोग ये 8 सिक्के मेरे पास छोड़ जाओ और मुझे सोचने का समय दो, मैं कल सवेरे जवाब दे पाऊँगा।'' पुजारी को दिल में वैसे तो दूसरे आदमी की 3–5 की बात ठीक लग रही थी पर फिर भी वह गहराई से सोचते–सोचते गहरी नींद में सो गया।

कुछ देर बाद उसके सपने में भगवान प्रगट हुए तो पुजारी ने सब बातें बताई और न्यायिक मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना की और बताया कि मेरे ख्याल से 3–5 बँटवारा ही उचित लगता है। भगवान मुस्कुरा कर बोले– ''नहीं, पहले आदमी को 1 सिक्का मिलना चाहिए और दूसरे आदमी को 7 सिक्के मिलने चाहिए।'' भगवान की बात सुनकर पुजारी अचंभित हो गया और पूछा– ''प्रभु, ऐसा कैसे ?''

भगवान फिर एक बार मुस्कुराए और बोले– ''इसमें कोई शंका नहीं कि पहले आदमी ने अपनी 3 रोटी के 9 टुकड़े किये परन्तु उन 9 में से उसने सिर्फ 1 बाँटा और 8 टुकड़े स्वयं खाएँ अर्थात उसका त्याग सिर्फ 1 रोटी के टुकड़े का था इसलिए वो सिर्फ 1 सिक्के का ही हकदार है। दूसरे आदमी ने अपनी 5 रोटी के 15 टुकड़े किये जिसमें से 8 टुकड़े उसने स्वयं खाऐ और 7 टुकड़े उसने बाँट दिए। इसलिए वो न्यायानुसार 7 सिक्कों का हकदार है। ये ही मेरा गणित है और ये ही मेरा न्याय है। ईश्वर द्वारा न्याय का सटीक विश्लेषण सुनकर पुजारी नतमस्तक हो गया।

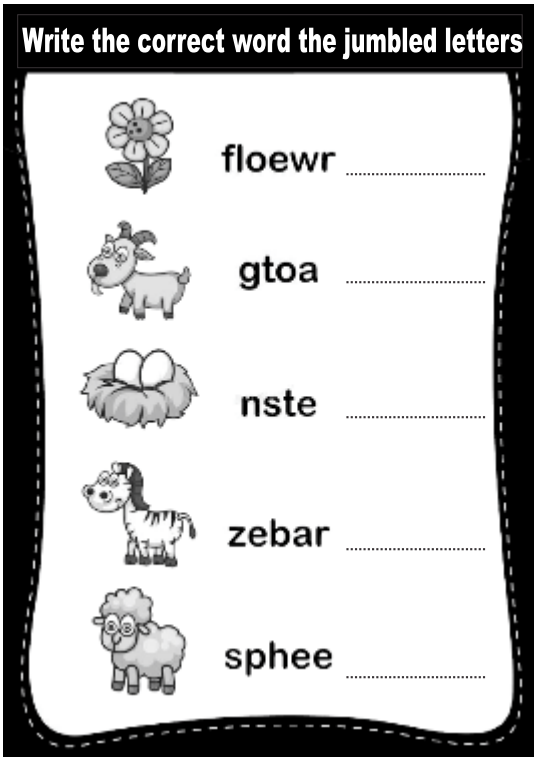

कद के करतब दिखाते दो गाँव

दोस्तो, इस बार हम आपको बता रहे हैं देश के दो विशेष गाँवों के बारे में। एक है कद में मात देता लम्बे लोगों का मरहिया गाँव और दूसरा है बौने कद वाले वाशिंदों का आमार गाँव।

कद में मात देता बिहार का मरहिया गाँव

अगर हम कहें कि हमारे देश में एक ऐसा भी गाँव है जहाँ के लगभग सभी लोग 6 फीट से ज्यादा लम्बाई के हैं तो तुम शायद चौंक जाओगे। लेकिन यह पूरी तरह सच है। बिहार के पश्चिमी चंपारण जिले का एक ऐसा गाँव है जहाँ के 90 प्रतिशत लोगों की लम्बाई छह फीट से ज्यादा है। यहाँ के 600 लोगों की औसतन लम्बाई छह फीट तीन इंच से लेकर छह फीट नौ इंच तक है। यह गाँव मरहिया पश्चिम चंपारण के लौरिया स्थित नंदनगढ़ के पीछे बसा हुआ है। इस गाँव में करीब 250 घर है जिसकी आबादी 1400 के आसपास बताई जा रही है। इस गाँव में पुरुष ही नहीं बल्कि लड़कियों की भी लम्बाई यहाँ की विवाहित महिलाओं से ज्यादा है।

ज्यादा लम्बाई होने के कारण यहाँ के ज्यादातर बच्चे सेना में जाने के लिए तैयारी करते हैं और सेना में भी कार्यरत हैं। यहाँ के बच्चे सेना में जाने के लिए प्रतिदिन सुबह चार बजे के बाद ग्राउंड मैदान में दौड़भाग और खेलकूद में हिस्सा लेते हैं।

बताया जाता हैं कि मूल रूप से ये लोग बिहार के सिवान हलुआर पीपरा गाँव के कौशिक वंशीय राजपूत हैं। पाँच पीढ़ियों से पश्चिम चंपारण के मरहिया गाँव में रहते हैं। इनके परिवार में लम्बा होना पूर्वजों से विरासत में मिली सौगात है।

बौनों का आशियाना आमार गाँव

असम–भूटान के बॉर्डर पर स्थित इस गाँव का नाम "आमार गाँव" है जिसका अर्थ होता है "हमारा गाँव"। इस गाँव में लगभग 70 लोग रहते हैं और सभी के सभी लोग बौने हैं। ये जानना जरूरी है कि यह

गाँव बौनों के लिए बसाया गया है न कि यहाँ कोई बौना ही जन्म लेता है। आमार गाँव में रहने वाले सभी लोगों का कद 4 फीट से कम है। आमार गाँव को वर्ष 2011 में नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा से ग्रेजुएट कलाकार पबित्र राभा ने बसाया है।

आमार गाँव को बसाने के पीछे मुख्य कारण के बारे में पबित्र राभा कहते हैं कि इस दुनिया में छोटे कद के लोगों का मजाक बनाया जाता है। ऐसे में उन्होंने बौनों का गाँव बसाया और असम के अलग–अलग क्षेत्रों से छोटे कद के लोगों को वहाँ इकट्ठा किया। ताकि सब एक जैसे लोग एक दूसरे का मजाक न उड़ाएँ। "आमार गाँव" के सभी लोग एक थियेटर ग्रुप में काम करते हैं और असम के भिन्न–भिन्न हिस्सों में जाकर प्रस्तुति देते हैं। ये सभी लोग दिन में खेती–बाड़ी करते हैं और रात को रंगमंच पर अपनी कलाकारी दिखाते हैं।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (प. बंगाल)

परोपकारी अतुल

अतुल अपने माता–पिता के साथ एक छोटे से कस्बे में रहता था। उसके कई मित्र भी थे। एक दिन माँ ने अतुल को कुछ रुपए देकर बाजार से सब्जी लाने को कहा क्योंकि आज ठेले वाला मोहल्ले में सब्जियाँ लेकर नहीं आया। अतुल ने माँ से रुपए और कपड़े का बैग लिया। फिर अपनी साइकिल उठाकर बाजार जाने के लिए घर से निकल पड़ा। अभी उसने घर का गेट खोला ही था कि कुछ पिल्ले पूँछ हिलाते हुए उसके करीब आ गए। अतुल समझ गया कि उन्हें क्या चाहिए? अतुल कटोरे में दूध ले आया और पिल्लों को पिलाया। यह एक नेक कार्य करने के पश्चात् अतुल साइकिल पर सवार होकर तेजी से चल पड़ा।

अतुल श्रीवास्तव जी के घर के सामने से गुजर रहा था। गुलाब और गेंदों के फूलों को देखकर वह रुक गया। फूलों पर धूल जमी हुई थी और तितलियाँ उन पर बैठी हुई थी। फूल तितलियों से कह रहे थे– ''बहना! हमारे तो रंग ही धूमिल कर दिए आँधी ने। कौन भला इन्हें लौटाएगा?'' ''मैं लौटाऊँगा रंगों को तुम्हें!'' अतुल ने धीमे से कहा। फूलों ने चौंकते हुए कहा– ''तो देर किस बात की फिर?'' अतुल भी संतुष्ट था कि उसने कोई भला कार्य किया। वह पुनः साइकिल पर बैठा और अपनी मंजिल की ओर बढ़ा।

ज्यों ही अतुल सब्जी मंडी के चौक के पास पहुँचा, एक स्कूटर सवार को तेजी से सामने से आता हुआ देखा। देखते ही देखते उस स्कूटर सवार ने साइकिल से जा रहे एक लड़के को टक्कर मारी। लड़का गिर पड़ा और उसे चोटें आ गयी। अतुल उसके पास पहुँचा। ''अरे यह तो विशेष है जो उसकी कक्षा में पढ़ता है।'' अतुल के मुँह से निकल पड़ा।

अतुल ने अपनी साइकिल सब्जी की एक दुकान के आगे रखी और लॉक लगाया। उसने विशेष

को रिक्शे में बिठाया और सिविल अस्पताल की ओर चल दिया। पीछे–पीछे स्कूटर सवार भी अस्पताल में आ गया था। दोनों ने मिलकर विशेष का उपचार करवाया और विशेष के घर पर फोन भी कर दिया।

विशेष के माता–पिता उस समय घर पर ही थे। घबराते हुए फौरन अस्पताल आ पहुँचे। ''विशेष को ज्यादा चोट नहीं लगी हैं।'' डॉक्टर ने बताया तो उनकी साँस में साँस आयी। तभी विशेष बोल उठा– ''माँ, अतुल ने मुझे बचा लिया अन्यथा कुछ भी हो सकता था।'' ''नहीं, विशेष! मुसीबत में एक मित्र ही दूसरे मित्र की सहायता करता है।'' अतुल बोला।

अतुल ने स्कूटर वाले अंकल की ओर इशारा करते हुए विशेष के माता–पिता से कहा– ''यही वह अंकल हैं जिनके स्कूटर की टक्कर से विशेष को चोट लगी हैं। स्कूटर वाले अंकल ने हाथ जोड़कर रुआँसे स्वर में कहा– ''प्लीज, मुझे माफ कर दीजिए। मैंने जान–बूझकर ऐसा नहीं किया। दरअसल, स्कूटर की ब्रेक अचानक फेल हो गयी और टक्कर लग गई।''

''कोई बात नहीं!'' तुम्हें अपनी गलती का एहसास हो गया है अतः तुम्हें माफ किया जाता है। फिर, तुम विशेष को देखने अस्पताल भी आए, यह कोई कम बड़ी बात नहीं है। लोग तो दुर्घटना के पश्चात् गायब हो जाते हैं अकसर!'' विशेष के पिताजी बोले।

अतुल भी खुश था कि उसने समय रहते अपने मित्र को किसी अनहोनी से पूर्व ही बचा लिया। उधर अतुल की माँ परेशान थी। अतुल को बाजार गए हुए दो घंटे हो गए थे जबकि सब्जी मंडी उनके घर से मात्र एक किलोमीटर की दूरी पर ही थी। वह अतुल की तलाश में सब्जी मंडी की ओर चल दी। सब्जी वाले की दुकान पर खड़ी अतुल की साइकिल को देख उनकी आँख से आँसू बह चले।'' ''जरूर कोई दुर्घटना हो गयी है।'' उन्होंने मन ही मन सोचा।

''हाँ, बहन जी! एक लड़के को कुछ देर पहले किसी स्कूटर सवार ने टक्कर मार दी थी, उसे अस्पताल ले जाया गया है।'' सब्जी वाले ने बताया।

माँ बिना समय गँवाए फौरन अस्पताल जा पहुँची। देखा कि अतुल तो ठीक–ठाक खड़ा है लेकिन उसका मित्र विशेष बेड पर लेटा हुआ है। हाथ–पाँव में पट्टियाँ भी बँधी हुई हैं। विशेष के माता–पिता ने अतुल की माँ को सारी घटना कह सुनाई। सुनकर माँ की छाती गर्व से फूल गयी थी।

विशेष के माता–पिता ने अतुल की भूरि–भूरि प्रशंसा की और इस परोपकार के कार्य हेतु उसका धन्यवाद–ज्ञापन भी किया। माँ अतुल को लेकर सब्जी मंडी की ओर चल पड़ी। अतुल ने साइकिल उठायी और माँ ने सब्जी खरीदी। कुछ ही देर बाद दोनों खुशी–खुशी घर पहुँचे।

डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल
गुरुग्राम (हरियाणा)

आगे कदम बढ़ाना

मानव जीवन सफल बनाना।
दुआ सभी की लेते जाना।।

सुख देने से सुख मिलता है,
सार सभी धर्मों ने माना।
करना है जी तोड़ परिश्रम,
अपने श्रम की रोटी खाना।

कर्म सदा अच्छे ही करना,
राह सत्य की तुम अपनाना।
वक्त चाहे कैसा भी आए,
मेरे मन तू मत घबराना।

साथ निभाए जो जीवन में,
उसका हरदम साथ निभाना।
हार जीत में आगे बढ़ते,
नित्य नए ही कदम बढ़ाना।

दुआ सभी को देते रहना,
दुआ सभी से लेते जाना।
सत्य यही जीवन का भैया,
एक दूजे के काम में आना।

वीनू शर्मा
जयपुर (राजस्थान)

पक्षियों को चाहिए ....

प्रकृति ने धरती पर तरह–तरह के पक्षियों की रचना की है। खुले आकाश में स्वच्छंद रूप से विचरण करना उनका स्वभाव है। प्रकृति ने उन्हें पंख इसीलिए प्रदान किए हैं, ताकि वे उड़ सकें। जिस तरह हमें घर या जेल में कैद रहना पसन्द नहीं है, उसी प्रकार पक्षियों को भी पिंजरे में कैद होकर रहना पसन्द नहीं है। वे इस कैद से मुक्त होने के लिए छटपटाते हैं।

माना कि पालक अपने पालतू पक्षियों को दाना–पानी देते हैं, जिससे उनका पेट भले ही भर जाए, किन्तु संतुष्टि नहीं मिलती। जो मजा पेड़ों पर फल खाने का है, वह भला पिंजरे में रखे पकवानों में कहाँ? यह कैसा पक्षी प्रेम है कि हम उन्हें पिंजरे में कैद रखते हैं?

पिंजरे का पंछी

यदि पक्षियों को लम्बे समय तक पिंजरे में कैद रखा जाए, तो उनका स्वास्थ्य प्रभावित होता है। उनकी शारीरिक गतिविधियाँ समाप्त हो जाती है। उड़ने से उनका शारीरिक व्यायाम होता था जो कि पिंजरे में बन्द होने की वजह से बाधित हो जाता है। पिंजरे में कैद रखकर हम उनकी वंशवृद्धि को रोकते हैं। उन्हें अंडे देने, उन्हें सेने ओर नन्हे बच्चों के पालन–पोषण से वंचित रहना पड़ता है।

जो पक्षी पिंजरे में कैद रहते हैं, वे घोंसला बनाना भूल जाते हैं। क्योंकि उन्हें इसकी जरूरत ही नहीं पड़ती। यहाँ तक कि उनकी उड़ान क्षमता भी समाप्त हो जाती है। उनके पंख इतने निष्क्रिय और बेजान हो जाते हैं कि उनमें उड़ने की ताकत नहीं रह जाती। ऐसे में यदि उन्हें पिंजरे से मुक्त भी कर दिया जाए तो वे ठीक से उड़ नहीं पाते और आसानी से शिकार बन जाते हैं।

पिंजरे से आजादी

कुदरत ने कुछ पक्षियों को रंगबिरंगा, खूबसूरत और आकर्षक बनाया है कि वे हमारा मन मोह लेते हैं। लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि हम उन्हें अपने घरों में पिंजरे में बन्द करके पालें। यद्यपि कानूनन पक्षियों को पिंजरे में कैद करके रखना अपराध है, फिर भी चोरी छिपे लोग इन्हें अपने घरों में पालते हैं।

कई प्रदेशों के वन विभाग ने पक्षियों को घर में पालने पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाया है। इसके तहत तोता, मैना, मुनिया, कबूतर, घरेलू उल्लू, कोयल, सुर्खाब, बुलबुल, मोर सहित सभी पक्षियों के घर में पालने पर प्रतिबंध लगाया गया है। इसके पहले पक्षियों को खरीदने और बेचने पर प्रतिबंध था। इसके बावजूद चोरी छिपे लोग खरीदकर या जंगलों से पकड़कर पक्षियों को पाल रहे थे। वन विभाग के कर्मचारी अपने–अपने क्षेत्रों में लोगों को जागरूक करते हैं कि पक्षियों को घरों में न पालें।

कई जगहों पर गौरेया जैसी छोटी देशी चिड़ियों को पकड़ कर उन्हें तरह–तरह के रंगों से रंगकर विदेशी पक्षी बताकर बेचा जाता हैं। कई बड़े शहरों में लाइसेंसी पेट शॉप पर असली विदेशी पक्षी भी बेचे जाते हैं। इन पर भी प्रतिबन्ध लगना चाहिए।

पक्षियों के प्रति प्रेम रखें, लेकिन उसे प्रदर्शित करने के लिए कैद कदापि नहीं करें। जब आप और हमें कैद में रहना रास नहीं आता, तो उन्हें कैसे आएगा? यदि आपके घर या किसी परिचित के यहाँ कोई पक्षी पिंजरे में कैद है, तो उन्हें मुक्त करने का आग्रह करें।

डॉ. विनोद गुप्ता
मन्दसौर (मध्यप्रदेश)

महिला बाक्सिंग

बाक्सिंग का खेल एक रोमांचक खेल है। इसमें ताकत के साथ–साथ चपलता भी बहुत जरूरी है। यह खेल बहुत पुराना है। इसे खेले जाने का उल्लेख 900 वर्ष ईसा पूर्व भी मिलता है। सन् 1927 में एक पुरातत्ववेत्ता डा. ई.ए.स्पीसर ने बगदाद में एक पत्थर की मूर्ति खोज निकाली जो करीब 7000 वर्ष पुरानी थी। इसमें दो व्यक्ति मुक्केबाजी के लिए तैयार खड़े थे।

आधुनिक बाक्सिंग की बात करें तो 12वीं से 17वीं शताब्दी तक इटली में बाक्सिंग खेल का उल्लेख मिलता है। इसे फिस्ट फाइट कहते थे। आरम्भिक बाक्सिंग में कोई नियम नहीं होता था। पहली बार एक बॉक्सर ने ही बाक्सिंग के लिए नियम बनाया। यह बॉक्सर था हैवीवेट बाक्सिंग चैम्पियन जैक ब्रॉटन। उसने बाक्सरों की जान बचाने के लिए यह नियम बनाए। इस नए नियम में यदि गिरा हुआ बॉक्सर 30 सैकंड में नहीं उठता था, तो उसे हारा हुआ घोषित कर दिया जाता था।

आज भी मुक्केबाजी का खेल दो भागों में बंटा है। कुछ मुक्केबाज पेशेवर होते हैं तो कुछ शौकिया। पेशेवर मुक्केबाजों के लिए अलग प्रतियोगिताएँ होती हैं। आमतौर पर शौकिया मुक्केबाज सफलता पाने के बाद पेशेवर मुक्केबाज बन जाते हैं। इससे उन्हें अच्छे पैसे भी मिलते हैं और शोहरत भी मिलती है। मुहम्मद अली, फ्रेंक टायसन, लेनक्स लुइस और जार्ज फोरमैन विश्व प्रसिद्ध मुक्केबाज हैं। मुहम्मद अली की बेटी लैला अली महिला बाक्सरों में विश्व प्रसिद्ध हैं।

भारत के मुक्केबाज

आज भारत में मुक्केबाजी बहुत लोकप्रिय है। हरियाणा के बॉक्सर पूरी दुनिया में नाम कमा रहे हैं। खासकर विजेंदर सिंह ओलिम्पिक में पदक पाने वाले पहले भारतीय बॉक्सर थे। पर उनसे भी एक कदम आगे थीं भारतीय महिला मुक्केबाज 27 वर्षीय एम.सी. मेरी कॉम। सन् 2000 में उसने पहली बार राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण पदक जीता। उसी वर्ष राष्ट्रीय प्रतियोगिता जीतने के बाद वह विश्व चैम्पियनशिप में गई और उपविजेता बनी। 2002 में अमेरिका के पेंसिलवेनिया में आयोजित विश्व चैम्पियनशिप में विश्वविजेता बनकर उसने तहलका मचा दिया। वह 6 बार विश्व चैंपियन बनीं। 2012 में मेरी कॉम ने ओलिम्पिक में कांस्य पदक जीता।

मेरी कॉम से प्रेरणा पाकर भारत में अनेक लड़कियों ने बाक्सिंग को अपनाया। लवलीना बोर्गोहेन ने 2020 के ओलिम्पिक में कांस्य पदक जीतकर मेरी कॉम की परम्परा को आगे बढ़ाया।

26 मार्च 2023 को भारतीय महिला मुक्केबाजों ने इतिहास रच दिया। नई दिल्ली के इंदिरा गांधी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में आयोजित आई.बी.ए. महिला विश्व मुक्केबाजी चैम्पियनशिप में भारत चार स्वर्ण पदक जीतकर स्वर्ण पदक तालिका में शीर्ष पर रहा।

नीतू घघास (48 किग्रा), निकहत ज़रीन (50 किग्रा), लवलीना बोरगोहेन (75 किग्रा) और स्वीटी बूरा (81 किग्रा) ने देश के लिए स्वर्ण पदक जीता। इस प्रतियोगिता में 65 देशों के कई ओलिम्पिक पदक विजेताओं सहित 324 मुक्केबाजों ने 12 भार वर्गों में भाग लिया।

अनिल जायसवाल
नई दिल्ली

बच गया चूहा

गुल्लो बुआ आज बहुत परेशान थी। होती भी क्यों ना! मोटे चूहे ने नाक में दम जो कर रखा था। आज उनकी नई साड़ी कुतर डाली थी, कल ही तो फूफा जी का पैन्ट कुतर डाला था। किचिन में रखी सब्जी–भाजी कुछ नहीं बच रही थी। मोटू चूहा दिन ब दिन और मोटा होता जा रहा था। होता भी क्यों ना! रात को गुल्लो बुआ बादाम फूलने डालती कि सुबह खाली पेट खाएँगे, कितना भी वजनदार सामान ढक देती थी किन्तु, मोटू चूहा रात के अँधेरे में किचन में जो धमाचौकड़ी मचाता कि बस! एकछत्र राज्य हो जाता था उसका। सुबह गुल्लो बुआ उठती, देखती बादाम गायब।

गुल्लो बुआ का बड़बड़ाना शुरू होता– उफ़, ये मोटू चूहा! बादाम खा– खाकर मोटा होता जा रहा है। जिधर देखो, उधर गन्दगी और नुकसान किये जा रहा है। दवा रखो तो खाता नहीं है और अगर खा भी लेगा तो मुझे हत्या का पाप लगेगा। मैंने कभी एक मच्छर तक तो मारा नहीं है। क्या करूँ कि 'साँप भी मर जाये और लाठी भी नहीं टूटे'।

गुल्लो बुआ का बड़बड़ाना सुनकर मोटू चूहा खिलखिलाकर हँसता और छिप जाता, कभी फ्रिज के नीचे, कभी आलमारी के पीछे। दिन भर मोटू चूहे ने खूब ऊधम किया। वह कभी मूँछ हिलाता, कभी पूँछ। कभी अपनी गोल–गोल आँखें मटकाकर गुल्लो बुआ को निहारता। किन्तु , गुल्लो बुआ अब कौन सा उपाय करने वाली हैं, मोटू को यह नहीं मालूम था।

रात हुई, गुल्लो बुआ मन ही मन मुस्कुराते हुए कह रही थी– अब देखती हूँ, इस मोटू के बच्चे को, भला अब कैसे नहीं फंसेगा? दरअसल, गुल्लो बुआ चूहादानी ले आईं थी और बड़े जतन से उसमें रोटी का टुकड़ा फँसा रही थी कि अब बच्चू मोटू को समझ में आएगा ऊधम का मजा! रात में चूहेदानी किचिन में रख दी और गुल्लो बुआ आराम से सो गईं।

इधर मोटू चूहे ने उछल–कूद मचाना शुरू किया और चूहादानी में देखा शानदार रोटी का टुकड़ा। उसने अभी तक चूहादानी देखी न थी, सो बेचारे मोटूराम रोटी के लालच में जैसे ही घुसे, वैसे ही चूहेदानी खटाक से बन्द हो गई। मोटू चूहे ने रोटी तो खाई किन्तु अब निकलें कहाँ से? वे घबराने लगे– ''हाय–हाय, गुल्लो बुआ, तुमने ये क्या गजब किया! मेरी आजादी छिन गई, मैं कैसे बाहर निकलूँ?''

रात भर मोटूराम छोटी सी चूहादानी से बाहर निकलने का रास्ता खोजते रहे और कोसते रहे अपने–आपको– ''मैं भी क्या एक रोटी के टुकड़े के लालच में आ गया, बाहर तो कितना–कुछ पड़ा रहता था। अब क्या करूँ? 'आँखों से नींद गई, मन का चैन भी गया'।'' उसे माँ की बात याद आने लगी 'लालच बुरी बला'। पर अब क्या कर सकता था। रात भर उसे गुल्लो बुआ का बड़बड़ाता हुआ चेहरा दिखाई देता रहा। वह सोचने लगा कि– ''कब गुल्लो बुआ पास आएँ और मैं उनका पल्लू पकड़ लूँ, बुआ माफ नहीं करोगी क्या? अरे भाई, अब बादाम नहीं खाऊँगा।''

सुबह हो गई। गुल्लो बुआ तो न आईं किन्तु, बिल्लो मौसी जरूर टपक पड़ी। मोटू चूहा जो अब तक घबरा रहा था, मूँछों पर ताव देकर बोलने लगा– ''अहा, बिल्लो मौसी, आ गईं आप! आओ चलो, पकड़ो–पकड़ो का खेल हो जाय।'' बिल्लो मौसी

गुर्राई, किन्तु मोटू मुस्कुराया क्योंकि वह तो अब सुरक्षित था। बिल्लो उसे पकड़ ही नहीं सकती थी। मोटू दो टाँग पर खड़े होकर पूँछ मटकाने लगा। मोटू को देखकर बिल्लो मौसी के मुँह में पानी आ रहा था। मोटू बार–बार उसका मन ललचा रहा था– ''गुल्लो बुआ ने मुझे रोज बादाम खिलाई है, बिल्लो मौसी। तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं।'' बिल्लो झपटी, मोटू हँसा खिलखिलाकर। बिल्लो जोर–जोर से गुर्राकर म्याऊँ–म्याऊँ करने लगी। वह भी कहाँ हार मानने वाली थी, आखिर वह शेर की मौसी जो थी। वह चूहादानी खोलने का उपाय सोचने लगी।

तभी मोटू को याद आया, उसकी माँ ने कहा था कि– ''हमेशा होशियार और सतर्क रहना चाहिए। खुशी में इतना भी मत फूलो कि बेसुध हो जाओ। मोटू एकदम सतर्क और भयभीत हो गया कि कहीं बिल्लो के झपट्टा मारने से पिंजड़ा खुल गया ता..? बिल्लो सचमुच झपट लेगी और जो मैं डींगें मार रहा था, सब धरी की धरी रह जायेगी।''

बिल्लो मौसी चारों तरफ से पड़ताल कर रही थी। तभी उसने जोर का झपट्टा मारा और पिंजड़ा पलट गया। मोटूराम उलटे लटक गये और पिंजड़े का कुंडा खुला ही था कि आवाज सुनकर गुल्लो बुआ प्रकट हो गईं और तेजी से बिल्लो की ओर लपकीं– ''बेवकूफ! मेरी मेहनत पर पानी फेरे दे रही है।'' उन्होंने चूहादानी सीधी करके कुंदा ठीक से बन्द कर दिया। गुल्लो बुआ ताली बजा–बजाकर जोर–जोर से हँसते हुए सबको आवाज लगाने लगीं– ''आओ टीनू, मीनू, चीनू देखो तो मोटू चूहे को। अब आया है ऊँट पहाड़ के नीचे।''

मोटू खुश हुआ, वह गुल्लो बुआ से जैसे फरियाद करने लगा– ''अरी बुआ, कब तक बन्द रखोगी? कहीं अच्छी जगह छोड़ना मुझे, जहाँ से मैं फिर तुम्हारे पास आ सकूँ।'' ऊपर छत पर चढ़ी बिल्लो मौसी गुल्लो बुआ को बार–बार गुर्राकर आँख दिखा रही थी। किये कराये पर पानी फेर दिया। एक झपट्टा और मारती तो मोटू मेरे मुँह में होता। किन्तु, क्या करती, 'खिसयानी बिल्ली खम्भा नोंचे'। मोटू चूहा चीं चीं चिक, चीं चीं चिक करके कह रहा था, मैं जानता हूँ गुल्लो बुआ, तुम बहुत दयालु हो, मुझे सुरक्षित स्थान पर छोड़ोगी। गुल्लो बुआ चूहेदानी उठाकर शान से ले चलीं, मोटू चूहे को बहुत दूर छोड़ने जहाँ से बिल्लो मौसी मोटू चूहे को ना खा सके।

सुधा गुप्ता
दुर्गापुर (पं.बंगाल)

अभ्यास कार्य : इस कहानी में आये पाँच मुहावरों/कहावतों को रेखांकित कीजिए।

गिनकर बताओ

खरगोश के झुंड के पास बालिका काव्या खड़ी है। उसे खरगोश की गिनती करने में आप मदद कीजिए।

उत्तर इसी अंक में

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

पढ़ो और जानो

इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में हैं, आपको उन्हें ढूँढ़ना है।

1. आलू की चिप्स का आविष्कार किसने किया ?
2. क्या आप व्हाट्सएप कहानी में दिये गये न्याय से सहमत हैं?
3. रामसधारन ने अर्जुन की जान कैसे बचाई ?
4. राजा राम मोहन राय के जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि क्या थी ?
5. घुमक्कड़ राम ने सबसे आखिर में किसका इन्टरव्यू लिया ?
6. हमारा चरित्र कैसे उत्तम बनता है ?
7. बन्दर की शादी क्यों नहीं हो सकी ?
8. हमारे राष्ट्र गान की रचना किसने की ?
9. मैरी कॉम किस खेल से सम्बन्धित है?
10. तम्बाकू निषेध दिवस कब मनाया जाता है ?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) हवामहल–जयपुर (ब) विक्टोरिया मेमोरियल–कोलकाता (स) बुलन्द दरवाजा– फतहपुर सीकरी (द) गेट वे ऑफ–इंडिया, मुम्बई (2) राजा सूरजमल (3) कोलकाता (4) गंगा नदी (5) गुजरात (6) वूलर झील (जम्मू–कश्मीर) (7) मसूरी (8) असम (9) श्रीहरिकोटा (10) एन एच–44 (श्रीनगर से कन्याकुमारी)

अन्तर ढूँढ़िए

(1) बादल का रंग अलग (2) शेर की आँख का आकार बड़ा (3) पेड़ की एक शाखा गायब (4) शेर के कान का रंग अलग (5) पक्षी अतिरिक्त (6) शेर की पूँछ गायब (7) बेंच अतिरिक्त (8) कछुए का आकार छोटा

दिमागी कसरत

शब्द सोपान–1 :(1) समाधान (2) हँसमुख (3) अवसर (4) इतिहास (5) राज्यसभा (6) आसमान (7) सरदार

शब्द सोपान–2 : (1) रत्नाकर (2) कारखाना (3) प्रचारक (4) आविष्कार (5) आचरण (6) परछाई (7) रमजान

बताओ तो जानें

नम्बर 2 और नम्बर 5 चित्र एक जैसे हैं।

गिनकर बताओ

कुल सात खरगोश हैं।

बूझो तो जानें

(1) कूलर (2) रसगुल्ला (3) फुट–स्केल (4) गौरैया (5) पानी

वर्ग पहेली

1 व	2 न	स्प	ति	3 शा	स्त्र		4 जु
रा		र्धा		5 स्त्री		6 क	र्मा
7 ह	8 म		9 ख		10 चा	ह	ना
11 मि	न	र	ल	वा	ट	र	
12 हि	मा	च	ल		म		13 ला
र	फि			14 झाँ	सा		भ
	15 क	16 ला	17 ई		18 ला	19 ली	
20 धी		21 र	ख	ना		22 ची	नी

सुडोकू

5	6	2	4	3	9	8	1	7
9	1	4	8	6	7	3	2	5
3	8	7	2	1	5	4	9	6
1	2	3	5	7	4	6	8	9
6	4	9	3	8	1	5	7	2
8	7	5	6	9	2	1	4	3
2	9	6	1	4	3	7	5	8
7	3	1	9	5	8	2	6	4
4	5	8	7	2	6	9	3	1

आरोही माहेश्वरी, कक्षा 4, चित्तौड़गढ़

मेरे पापा मेरे हीरो

हर लड़की के हीरो उसके पापा ही होते हैं। मेरे पापा मुझे बहुत ही ज्यादा सपोर्ट करते हैं और मदद करते हैं। मेरे पापा ने मुझे स्कूटी चलाना और बैडमिंटन खेलना सिखाया।मुझे सोशलाइज बनाया।

वह मुझे हर समय पढ़ाई में भी बहुत मदद करते हैं। उन्हीं के कारण मैंने कॉमर्स स्ट्रीम लिया है और वह खुद भी चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं तो मुझे पढ़ाई में बहुत मदद मिलती है। लॉकडाउन के दौरान उन्होंने मुझे रोटी बनाना सिखाया। वह हमें हर चीज की कीमत सिखाते हैं। मुझे जिस भी चीज की जरूरत होती है चाहे वह कितनी भी महँगी क्यों न हो वे मुझे कैसे भी करके दिलाते हैं।

ड्राइंग का सामान, रेफरेंस बुक मेरे एक ही बार कहने पर खरीद के देते हैं। चाहे उनका कितना भी बिजी शेड्यूल क्यों न हो, वह हमारे लिए समय निकाल ही लेते हैं।

वे मुझे हर साल एक नई जगह घुमाने लेकर जाते हैं। मेरे पापा ने मुझे बहुत सारी चीजों में फ्रीडम दी है, वह मुझे बर्थडे पार्टी और पिकनिक इन सब में अकेले जाने की परमिशन देते हैं। जब भी मैं बीमार पड़ती हूँ वही मुझे सबसे ज्यादा हिम्मत देते हैं और मम्मी के बाद मेरा सबसे ज्यादा अच्छा ख्याल वही रखते हैं।

स्नेहा चौखाड़ा, कक्षा 11, थाने (महाराष्ट्र)

कीर्ति गोयल, कक्षा 6, सिलीगुड़ी

प्रिशा चौखाड़ा, कक्षा 8, थाने (महाराष्ट्र)

आयशा लोहिया, कक्षा 6, राजसमन्द

महक प्रज्ञा बोथरा, कक्षा 8, दिल्ली

आप भी अपनी **कलम और कूँची** का कमाल
हमें मोबाइल नं. 9351552651 पर या
पत्रिका के पते पर भेजें।

विश्व एथेलेटिक दिवस

खेल और व्यायाम, सेहत के आयाम

सोनिया कुमारी

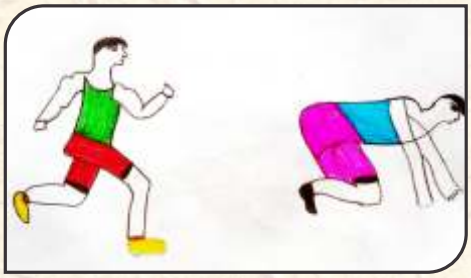

साइन कुमारी

राणी कुमारी

ललिता कुमारी

सुरता कुमारी

तेजल

जया कुमारी

दीपिका कुमारी

सीमा

सामग्री सौजन्य : आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन द्वारा गाँवों में संचालित सखियों की बाड़ी केंद्र, ब्लॉक- पिंडवाड़ा, बाली

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

पुस्तक परब

मोबाइल और इंटरनेट के उपयोग के बीच नई पीढ़ी किताबों से दूर हो रही है। ऐसे में शिक्षक जितेन्द्र मकवाना को लगा कि नई पीढ़ी को किताबों की जरूरत है और इसी विचार से 'पुस्तक परब' की शुरुआत की गई। इसमें उन्हें शिक्षक राघव दाभी और किशोर परमार का सहयोग मिला। तीनों ने साथ मिलकर अपने पास की कुछ किताबें इकट्ठी की और मोटा वराछा ऑक्सीजन पार्क गार्डन पर नई किताब मिलने की शुरुआत की। यहाँ से कोई भी व्यक्ति अपना नाम, पता और मोबाइल नंबर लिखकर मनपसन्द पुस्तक निःशुल्क ले जा सकता है और एक महीने में लौटा सकता है।

महिला विश्व मुक्केबाजी चैम्पियनशिप

कॉमनवेल्थ गेम्स की गोल्ड मेडल विजेता नीतू (48 किग्रा) और अनुभवी मुक्केबाज स्वीटी बूरा (81 किग्रा) महिला विश्व मुक्केबाजी चैम्पियनशिप में अलग-अलग अन्दाज में जीत से विश्व चैम्पियन बनीं और इतिहास में अपना नाम दर्ज करा लिया। नीतू ने शानदार प्रदर्शन करते हुए मंगोलिया की लुतसाईखान अल्तानसेतसेग को 5–0 से हराकर न्यूनतम वजन वर्ग का गोल्ड मेडल अपने नाम किया। स्टेडियम में बीजिंग ओलिम्पिक की कांस्य पदक विजेता और नीतू के आदर्श विजेंदर सिंह भी मौजूद थे।

चुटकियों में फोल्ड होने वाली मिनी इलेक्ट्रिक बाइक

मोटरसाइकिल कंपनी फेलो की 'एम-वन' ऐसी मिनी इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल है, जो हल्की है और आसानी से फोल्ड हो जाती है। फेलो ने इसे इमरजेंसी मिनी मोपेड कहा है, जो छोटी यात्राओं के लिए बेहतर है। लिथियम बैटरी-पैक युक्त इस मोटरसाइकिल का कर्ब वेट 37 किलोग्राम है और यह 400 वाट की रेटेड पावर 1 किलोवाट की अधिकतम आउटपुट पावर और 100 किलोमीटर तक की क्रूजिंग रेंज देती है।

मूँछें हो तो अमरीका के पॉल स्लोसर जैसी

अमरीका में साउथ कैरोलिना के पॉल स्लोसर को सबसे लम्बी मूँछ रखने का खिताब मिला है। समरविले के पॉल स्लोसर ने कैस्पर, वायो में नेशनल बियर्ड एंड मूँछ चैंपियनशिप में 63.5 सेमी (2 फीट 1 इंच) मूँछ के साथ गिनीज वर्ल्ड रेकॉर्ड्स बनाया है। पॉल ने 30 साल से अपनी मूँछ को शेव नहीं किया है।

14 फीट ऊँचे ट्रक की महिला ड्राइवर

40 वर्षीय हैली का कद 4 फीट 9 इंच का है। वे 44 टन वजनी 16 पहियों वाला 14 फीट ऊँचा ट्रक चलाती है। गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड यह जाँच रहा है कि क्या वे इतने ऊँचे ट्रक को चलाने वाली सबसे छोटे कद की ड्राईवर हैं। वे कहती हैं, जब भी ट्रक से उतरती हूँ तो लोग देखकर अचंभित हो जाते हैं।

90 साल की उम्र में लहरों की सवारी

फुजिसावा में 90 वर्ष के जापानी सेइची सानों को गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने सर्फ करने वाले सबसे उम्रदराज पुरुष की मान्यता दी है। सर्फिंग के दौरान लहर पर सवार सानों पूरे आत्मविश्वा से भरे दिखाई देते हैं।

What is success?

The prime cause of success

It is very hard to say about the number one important cause of success. Yet, I think concentration is the first one needed to achieve success. Concentration supports other success factors. As we see, even 5000 years ago, Dronacharya took the test of concentration where only Arjun succeeded in viewing only bird's eye.

The secrets of success

There are no secrets of success. All the practical techniques are only the so called secrets. If you practice them your chances of success will automatically improve.

The role of available facilities in achieving success

Facilities are non living things. It depends upon the user: You can make it a blessing as well as a curse for yourself.

it is easy to slip on a slippery surface. This is the case with the facilities. To ride from lower level to a higher one is a challenge. Many people get success in difficult situations also. Many do not get success even in favourable situations too.

Success is the sweetest revenge of all. For all Challenges, taunts, quarrels, problems and troubles, success is the most positive reply which can benefit you to a very great extent.

Jayanti Jain, Udaipur

लेन-देन का लाभ

एक बहुत ही शैतान बन्दर था, जो जंगल के सभी जानवरों का खाना चुराकर खाता था। कई बार उसकी चोरी पकड़ी गई, बाकी जानवरों ने भी समझाया लेकिन वह शैतान बन्दर नहीं माना। एक बार जंगल में तूफान आया, सभी जानवरों का जीवन अस्त व्यस्त हो गया। उस शैतान बन्दर के पास खाने के लिए कुछ नहीं बचा। जंगल के बाकी जानवर अपने लिए बहुत मुश्किल से खाना इकट्ठा कर रहे थे क्योंकि तूफान में सारे फल पेड़ से गिर गए, जो पौधे जानवर खाते थे वह भी खराब हो गए। किसी जानवर के पास खाना इकट्ठा करने के लिए नहीं था, जितना मिल रहा था उसी में काम चला रहे थे।

शैतान बन्दर बहुत परेशान था क्योंकि पेड़ से सारे केले और बाकी फल टूटकर गिर चुके थे और खराब हो गए थे। बन्दर ने एक चिड़िया से मदद की गुहार लगाई– ''मुझे भूख लग रही है कुछ खाना दे दो।'' चिड़िया ने कहा– ''मैं तो दाना खाती हूँ, तुम्हें खिलाने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है।'' बन्दर उदास हो गया।

पहले की तरह वह दूसरे जानवरों का खाना लेने निकला तो उसने देखा किसी के पास भी खाना नहीं है। सब घास खाकर पेट भर रहे हैं। ऐसे परेशान होते दो दिन निकल गए। एक हाथी कहीं दूर से केले की एक डाली तोड़कर ला रहा था, जिसे शैतान बन्दर ने देख लिया। उसने सोचा हाथी से छीनकर में खा लूँगा पर वह हाथी के पास पहुँचता उससे पहले ही बाकी जानवर वहाँ पहुँच गए।

उन्होंने उस शैतान बन्दर को डरा धमकाकर भगा दिया। वह बन्दर दूर जाकर डाली पर बैठ गया और देखता रहा कि कैसे हाथी ने सभी जानवरों को एक एक केला दिया और दुबारा जाकर और खाना लाने का वादा किया। बन्दर बहुत दुःखी हुआ। उसे अपनी गलती का एहसास हो रहा था कि– ''काश! यदि वह खाने की चोरी न करता तो उसे भी आज खाना मिल जाता।'' खाने की तलाश में वह फिर से भूखा प्यासा भटकने लगा। लेकिन खाना न मिलने की वजह से उसकी ताकत खतम हो गयी जिसके चलते वह जंगल आने जाने के रास्ते पर बैठ गया।

इस बार फिर उसे हाथी ढेर सारे केले लाते दिखा, उस हाथी के पीछे दो आदमी दौड़ रहे थे जो हाथी से केले छीनने की कोशिश कर रहे थे। बन्दर ने दोनों आदमियों पर हमला कर दिया और उन्हें भगा दिया। हाथी ने बन्दर का शुक्रिया किया और कहा– ''कभी कुछ जरूरत पड़े तो बताना।'' बन्दर ने हाथ जोड़कर अपनी पुरानी गलतियों की माफी माँगी और कहा– ''अबसे दुबारा चोरी नहीं करूँगा, अभी कुछ खाने को दे दो। हाथी को उस बन्दर पर तरस आ गया, उसने भूखे बन्दर को तीन केले दिए खाने को फिर उसे अपनी पीठपर बैठाकर जंगल वापस ले आया। सभी जानवरों ने बन्दर का दिल खोलकर स्वागत किया। उस दिन बन्दर को लेने और देने का मतलब समझ आया।

जयति जैन 'नूतन'
भोपाल (मध्य प्रदेश)

अंगूर

चित्रकथा-

संकेत गोस्वामी, जयपुर (राज.)

– वेणु वल्लियाथ

Colour the Number

Colour the number nine.

nine

9

Nine Glasses

Colour the Nine

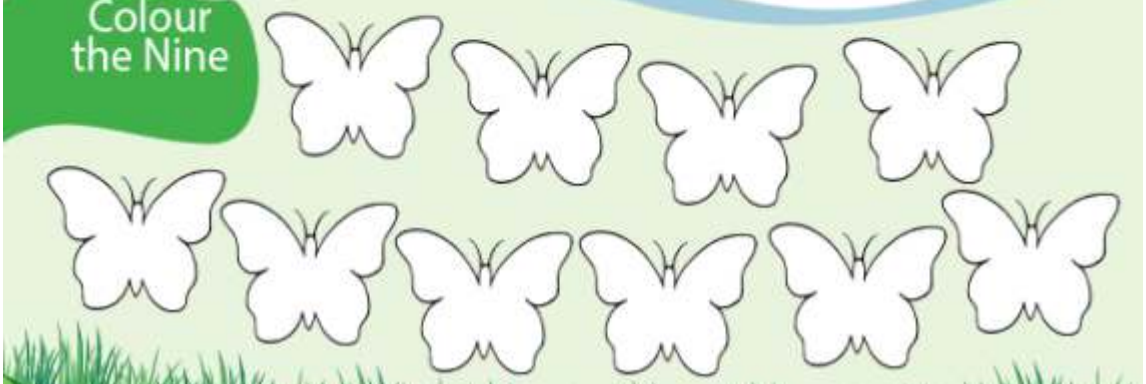

Three picture pieces are given on the right side. Which of these is exactly the portion marked in the big picture.

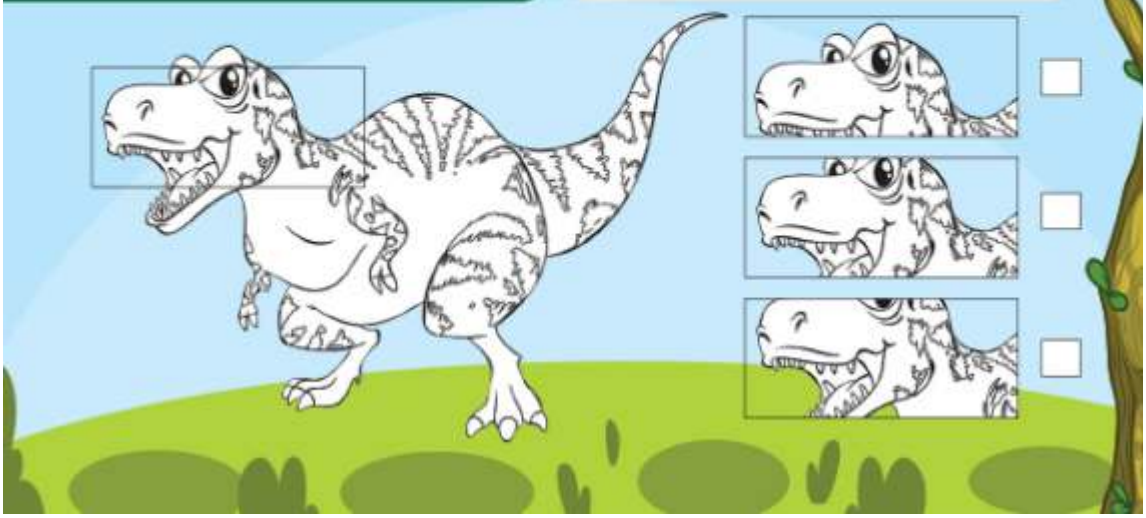

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

AkashGanga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom,
Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur,
New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

अणुव्रत यात्रा

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तन के 75वें वर्ष को देश–विदेश में अणुव्रत अमृत महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है। अमृत महोत्सव के शुभारम्भ की घोषणा के साथ ही अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने अपनी पदयात्रा को 'अणुव्रत यात्रा' के रूप में घोषित कर नव इतिहास गढ़ दिया। आचार्यश्री ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को अणुव्रत यात्रा के मुख्य उद्देश्य निर्धारित किए हैं। ये तीनों ज्वलंत विषय जहाँ देश की वर्तमान परिस्थितियों में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं वहीं अणुव्रत दर्शन का सार–स्वरूप भी।

अणुव्रत यात्रा में अणुविभा के तत्वावधान में अणुव्रत कार्यकर्ताओं का एक दल भी शामिल रहता है। कार्यकर्ता गाँवों में संपर्क करते हैं और डॉक्यूमेंट्री फिल्म और संवाद के माध्यम से गाँववासियों को अणुव्रत के दर्शन और अणुव्रत यात्रा के उद्देश्यों से परिचित कराते हैं। अणुव्रत अनुशास्ता पदयात्रा करते हुए पधारते हैं तो वे स्वयं रुक कर उपस्थित जनता से संवाद करते हैं और इच्छुक व्यक्तियों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का संकल्प दिलाते हैं। आचार्यप्रवर की यह सरलता और उदारता देख कर गाँववासी अभिभूत हो जाते हैं।

मई, 2023

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

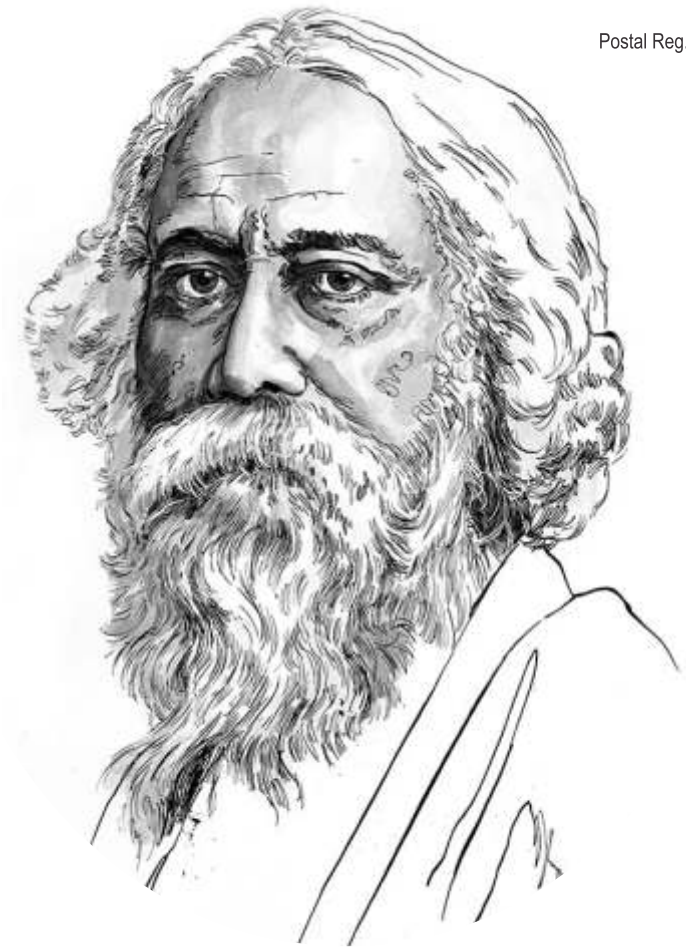

रबीन्द्रनाथ ठाकुर

जन्म : 07 मई, 1861 ■ निधन : 07 अगस्त, 1941

कोलकाता के जोड़ासाँको ठाकुरबाड़ी में जन्में रवींद्रनाथ विश्वविख्यात कवि, साहित्यकार और दार्शनिक थे। आपकी पुस्तक गीतांजलि को नोबेल पुरस्कार मिला। आपने बांग्ला साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नयी जान फूँकने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। आप भारत के राष्ट्र-गान 'जन गण मन' के रचयिता और शांति निकेतन के संस्थापक रहे। साहित्य की सभी विधाओं में आपने अनेक लोकोपयोगी पुस्तकों का लेखन किया।

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक